ऑक्टोंबर २०२२

हर महिने के १०/११ तारीख को शाया (प्रसिद्ध) होता है।

शुमारा हदिया : २५ /-

- संस्थापक
  हाजी ए.आय.मुजावर
- संपादिका
  प्रो. शाहीन निजामुद्दीन मुल्ला
  ७८४१९३७३९३
- मांडणी सजावट
  रेहान ग्राफीक्स, सांगली.
  ९९२३४३७३६७

दिन-दुनिया की मालूमात को कामयाबी की ओर
ले जानेवाला इस्लामी माहनामा (डायजेस्ट)

मुस्तफा

स्व.अ.स

* साल १५ * शुमारा १० * रबीउल अव्वल * हिजरी १४४३

ध्यान से पढीए

सालाना मुल्य केवल २५०/- रू.

(सालाना विशेषांक के साथ)

- सालाना मेम्बरशीप इधर-उधर
  किसी नाम पे मत भेजिए।

मुस्तफा लाईफटाईम मेंबरशीप
४000रू/-

इस बैंक खातेपर कहींसे भी फिस जमा
कर सकते है -
* सालाना मेम्बरशीप फिस रू. २५०/-
नैशनलाईज बँक के चेक पर

SBI A/c No.20240440743

IFSC COD : SBIN0008234
Google Pay No. 7841937393

• आईना •

-: खतो - किताबात का पता :-

संस्थापक:
ए. आय. मुजावर, संपादक - मुस्तफा
५७९, सिव्हील हॉस्पिटल रोड, साऊथ शिवाजीनगर, सांगली.

संपादिका:
प्रो. शाहीन निजामुद्दीन मुल्ला
५९८, सिव्हील हॉस्पिटल रोड, साऊथ शिवाजीनगर, सांगली.
email : mustafathemagazine@gmail.com , 7841937393

मुस्तफा में छपनेवाली कुरआने करीम की आयतें और अहादीसे नबवी स० चाहे वह अस्ल हो या तर्जुमा,
अपनी दीनी मालुमात में इजाफे के लिए छापी जाती है, इसीलिए उनका एहतराम आपपर फर्ज है ।
लिहाजा मुस्तफा के अंको और पन्नोंको बेहुरमती से महफूज रखिए ।

शेरे खुदा (हज़रत अली रज़ि०) के इर्शादात

(१) अमल से बढ़ कर उस की कबूलिय्यत का एहतिमाम करो, इस लिये कि परहेज़ गारी के साथ किया गया थोड़ा अमल भी बहुत होता है और जो अमल मक़बूल हो जाए वोह कैसे थोड़ा होगा ?

(२) (ईद के दिन फ़रमाया :) हर वोह दिन जिस में अल्लाह पाक की ना फ़रमानी न की जाए हमारे लिये ईद का दिन है।

(३) मैं तुम पर दो चीजों से बहुत ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा रहता हूं : १.ख्वाहिश की पैरवी और २. लम्बी उम्मीदें।

(४) जो शख्स येह गुमान रखता है कि नेक आमाल अपनाए बिगैर जन्नत में दाखिल होगा तो वोह झूटी उम्मीद का शिकार है।

(५) खर्च करो, तश्हीर न करो और खुद को इस लिये बुलन्द न करो कि तुम्हें पहचाना जाए और तुम्हारा नाम हो बल्कि छुपे रहो और खामोशी इख्तियार करो, सलामत रहोगे।

(६) इन्सान का क़द २२ साल जब कि अक्ल २८ साल की उम्र तक बढ़ती है, इस के बाद मरते दम तक तजरिबात का सिल्सिला रहता है।

(७) गुनाहों की नुहूसत से इबादत में सुस्ती और रिज्क में तंगी आती है।

(८) बन्दा बेसब्री कर के अपने आप को हलाल रोज़ी से महरूम कर देता है और इस के बा वुजूद अपने मुक़द्दर से ज़ियादा हासिल नहीं कर पाता।

(९) जिस तक्लीफ के बाद जन्नत मिलने वाली हो वोह तक्लीफ़ नहीं और जिस राहत का अन्जाम दोज़ख पर हो वोह राहत नही।

(१०) अपनी राय को काफ़ी समझने वाला खतरे में है।

(११) जब तुम अपने दुश्मन से बदला लेने पर कादिर हो जाओ तो इस के शुक्राने में उसे मुआफ़ कर दो।

(१२) उन लोगों में से मत होना जिन्हें नसीहत उसी वक्त फाएदा देती है जब मलामत में मुबालगा (यानी बहुत ज़ियादा शरमिन्दा) किया जाए।

(१३) लालच की चमक देख कर अक्सर अक्ल मार खा जाती है।

(१४) जब किसी शख्स की अक्ल कामिल हो जाती है तो उस की गुफ़्तगू में कमी आ जाती है।

(१५) लोगों में जो ज़ियादा इल्म वाला होता है वोह अल्लाह पाक से ज़ियादा डरता, ज़ियादा इबादत करता और अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये ज़ियादा नसीहत करता है।

(१६) माल व औलाद दुन्या की खेती है और नेक आमाल आखिरत की, अल्लाह पाक अपने बहुत से बन्दों को यह सब अता फ़रमाता है।

(१७) अगर मैं चाहूं तो सूरतुल फ़ातिहा की तफ्सीर से ७० ऊंट भर दूं। (यानी उस की तफ्सीर लिखते हुए इतने रजिस्टर तय्यार हो जाएं कि ७० ऊंट उसे उठाए।)

(१८) अगर शराब का एक क़तरा कूएं में गिर जाए फिर उस जगह मनारा बनाया जाए तो मैं उस पर अज़ान न कहूं और अगर दरिया में शराब का कतरा गिरे फिर दरिया खुश्क हो और वहां घास पैदा हो तो मैं उस में अपने जानवरों को न चराऊं।

(१९) लम्बी उम्मीदें आखिरत को भुलाती हैं और ख्वाहिशात का इत्तिबाअ हक़ से रोकता है।

(२०) अपने घरों से मक्ड़ियों के जाले दूर करो, यह नादारी (तंगदस्ती) का बाइस होते हैं।

समाज में एक नए बदलाव की जरूरत

सम्पादकीय

हम मुसलमानों से बराबर यह बात कहते रहे हैं कि पहले वह खुद इस्लामी तालीमात पर अमल करना सीखें, कुरआन का भी यही मुतालबा है कि मुसलमान इस्लाम में पूरे के पूरे दाखिल हो जाएं और शैतान की पैरवी न करें। यह तो कोई बात नहीं हुई कि हम खुद तो अमल न करें और उम्मीद यह रखें के दूसरे इस्लाम में गिरोह दर गिरोह दाखिल हों, ज़ाहिर है कि इस्लाम का नमूना तो हमें ही पेश करना होगा। हमारे समाज में कैसी–कैसी खराबियां पैदा हो गयी हैं। दूसरों की देखा–देखी कैसी–कैसी रस्में और मनचाही तकरी रिवाज पा चुकी हैं, कहा नहीं जा सकता। दूसरे मजाहिब में औरतों को विरासत में शरीक नहीं किया जाता तो हमारे समाज में भी उसी का चलन है। दीने मेहर शायद दस–पन्द्रह फीसद लोग अदा करते हो। इस सिलसिले में कोई सर्वे नहीं हो सका है वरना पता चल जाता कि कितने फीसद मुसलमान औरतों को उनका शरई हक अदा करते हैं, जो लोग यह हक दबाए बैठे हैं वह खब अच्छी तरह समझ लें कि वह बड़े गुनाह के मुरतकिब हो रहे हैं और उन्हें इसका अजाब झेलना पड़ेगा। अगर शरीअत का दिया हआ हक अदा किया जाने लगे तो हमारे समाज में इन्किलाब आ जाएगा।

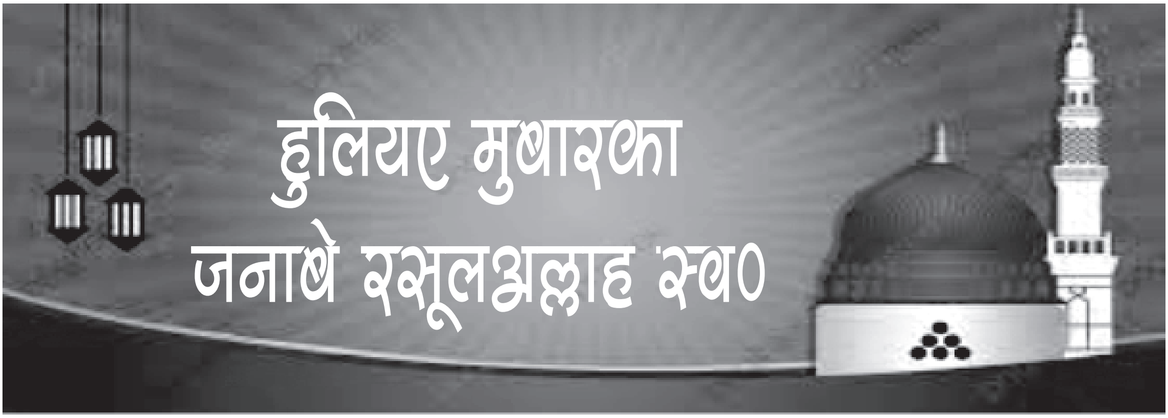
बीस–पचीस साल पहले का रिकार्ड उठाकर देख लीजिए, कितने लोग हज को जाते थे, मस्जिदों की तामीर और मुसल्लियों की तादाद क्या हुआ करती थी और आज क्या है? यकीनन इसमें काफी इजाफा हुआ है, इसकी वजह इसके सिवा कुछ नहीं कि दूसरों को अच्छे या बुरे काम करते देखकर इन्सान मुतास्सिर हो जाता है, हमें चाहिए कि सैयात के बजाए हसनात व खैरात की तरफ कदम बढ़ाए ताकि हमारे अइज़्ज़ा व अहबाब को भी इसको अपनाने की तौफीक हो। क्या कोई कह सकता है कि मुसलमान नशे वाली चीज़ों का इस्तेमाल नहीं करते? खूब करते हैं, जो कल करते थे वह आज भी कर रहे हैं, सूद के लेन–देन में भी बहुत से लोग गले–गले तक डूबे हुए हैं, तिलक और जहेज बिरादराने वतन की धर्म की रौ से दुरुस्त हो सकता है, लेकिन हमारे मज़हब में इसकी कोई अस्ल नहीं है, इस जमाने में शादी हद से ज्यादा खर्चीली हो रही है, कोरोना के इब्तिदाई दौर में सरकारी पाबन्दियों के सबब निहायत सादगी और किफायत शेआरी के साथ शादियां होने लगी थीं लेकिन जब से सस्तियों में कमी आयी है, शादियां खूब धूम–धाम से हो रही हैं, ऐसा करने वालों को शायद अंदाजा नहीं है कि इस ज़माने में इस्लाम और मुसलमान को किन हालात से गुज़रना पड़ रहा है, कल की बात है कि मुआन्दीने इस्लाम ने किस तरह शरई कवानीन पर तीशे चलाए, हर्जा सराई की, मजाक उड़ाया, तलाक को ऐब बताया और हव्वा बनाकर खड़ा कर दिया फिर भी हमें गैरत नहीं आयी।

हम अगर जाएजा लें तो खुद अपने खानदान में कितने लोग ऐसे निकल आएंगे जिनकी बेटियां घरो में बैठी–बैठी बूढ़ी हो रही होंगी, कितने लोग बीमार होंगे, कितने मआशी तंगी से दोचार होंगे, हमारी ज़रा सी तवज्जो और मदद से उनकी मुश्किलें आसान हो सकती हैं, कितने जीइस्तेदाद मुसलमान आला तालीम हासिल करना चाहते होंगे, मगर माली दुश्र्वारियों की वजह से आगे न बढ़ पाते होंगे, हमें ऐसे नवजवानों को मिल्लत का सरमाया समझकर हिम्मतअफजाई करनी चाहिए, उनकी दिल खोलकर मदद कीजिए, इस कदम की इंशाअल्लाह तकलीद की जाएगी। हर मुसलमान तरजीही बुनियाद पर यह सारे काम करे और जब ऐसा होने लगे तो आप देखेंगे कि समाज में एक नया बदलाव और नई सोच पैदा होगी और आंखे टेढ़ी करने वाले आंखों पर जगह देने वालेबन जाएंगे। हम एक बात और कहना चाहते हैं कि अगर इतना मुफीद नुस्खा हम अब तक इस्तेमाल न कर सके तो क्या ज़रूरी है कि इसके फ़वाएद से आगाह होते हुए अब भी इससे बेपरवाह रहें, हमने अब तक खूब नारे लगाए, जलसे किये, जुलूस निकाले मगर कुछ हाथ नहीं आया. अब जरा यह काम भी करके देख लें।

नेक काम में जल्द बाजी पसन्दीदा है

जल्द बाज़ी वैसे तो कोई अच्छी बात नहीं, लेकिन नेकी के काम में जल्दी करना और जिस नेकी का ख्याल दिल में पैदा हुआ है, उस नेकी को कर गुज़रना, यह अच्छी बात है। और मुसारअत के मायने हैं कि एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो, रेस करो, मुकाबला करो, अगर दूसरा आगे बढ़ रहा है तो मैं उससे और आगे बढ़ जाऊं। और इसी काम के लिये अल्लाह तआला ने हमें यह वक़्त अता फ़रमाया है, इस हदीस को अल्लाह तअला हमारे दिलों में उतार दे, और इस पर अमल करने की तौफीक अता फ़रमा दे, आमीन। आज हम लोगों ने अपने आपको गफ्लत और बेफिक्री में मुब्तला किया हुआ है, चौबीस घन्टे के सोच विचार में आख़िरत की फ़िक्र और आख़िरत का ध्यान बहुत कम आता है। गफलत में बढ़ते चले जा रहे हैं। इस मज़मून को हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस तरह इर्शाद फरमाया कि:'' पांच चीजों को गनीमत समझो उमर बिन मैमून औदी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक साहिब को नसीहत करते हुए फ़रमाया कि पांच चीज़ों को पांच चीज़ों से पहले गनीमत समझो। बुढ़ापे से पहले जवानी को गनीमत समझो, और बीमारी से पहले सेहत को गनीमत समझो, और मालदारी को मुहताजी से पहले गनीमत समझो, और फुर्सत को मशगूली से पहले गनीमत समझो, और अपनी ज़िन्दगी को मौत से पहले गनीमत समझो। जवानी की कद्र कर लो मतलब यह है कि ये पांचों ऐसी हैं कि इनका खात्मा होने वाला है इस वक्त जवानी है, लेकिन जवानी के बाद बुढ़ापा आने वाला है, यह जवानी हमेशा बाकी रहने वाली नहीं है, बल्कि या तो इसके बाद बुढ़ापा आयेगा, या मौत आयेगी, तीसरा कोई रास्ता नहीं है। इसलिये उस बुढ़ापे से पहले इस जवानी को गनीमत समझो। यह कुव्वत और तवानाई और सेहत अल्लाह तआला ने इस वक्त अता फ़रमाई है, इसको गनीमत समझ कर अच्छे काम में लगा लो, बुढ़ापे में तो यह हाल हो जाता है कि न मुंह में दांत और न पेट में आंत, उस वक्त क्या करोगे जब हाथ पांव नहीं हिला सकोगे, शैख़ सादी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि यानी बुढ़ापे में तो ज़ालिम भेड़िया भी परहेज़गार बन जाता है। क्यों? इसलिये कि खा ही नहीं सकता, ताक़त ही न रही, अब किस को खायेगा। अरे जवानी में तौबा करना पैग़म्बरों का शेवा है, इसलिये फरमाया कि बुढ़ापे से पहले जवानी को गनीमत समझो। सेहत, मालदारी और फुर्सत की कद्र करो इस वक्त सेहत है, लेकिन याद रखो, कोई इन्सान दुनिया के अन्दर ऐसा नहीं है कि सेहत के बाद उसको बीमारी न आए। बीमारी ज़रूर आयेगी, लेकिन पता नहीं कब आ जाए। इसलिये उससे पहले मौजूदा सेहत को गनीमत समझ लो। और इस वक्त अल्लाह तआला ने माली फ़रागत और मालदारी अता फ़रमाई है। कुछ पता नहीं कि यह कब तक की है, कितने लोग ऐसे हैं जिनके हालात बदल गये हैं, अच्छेखासे अमीर कबीर थे, मगर अब .

बकाया पान नं २९ पर



रुखे अनवर

हुजूरे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का चेहरए मुनव्वर जमाले इलाही का आईना, और अनवारे तजल्ली का मजहर था। निहायत ही वजीह, पुर गोश्त और किसी कदर गोलाई लिये हुए थे। हज़रते जाबिर बिन समरा रजियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को एक मर्तबा चाँदनी रात में देखा। मैं एक मर्तबा चाँद की तरफ देखता और एक मर्तबा आपका चेहरए अनवर को देखता। तो मुझे आपका चेहरा चाँद से भी ज्यादा खूबसूरत नज़र आता था। हज़रते बरा बिन आज़िब रजियल्लाहु अन्हु से किसी ने पूछा कि क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का चेहरा (चमक दमक में) तलवार के मानिन्द था? तो आपने फ़रमाया कि नहीं बलिक आप का चेहरा चाँद के मिस्ल था । हज़रते अली रजियल्लाहु अन्हु ने आपके हुलियए मुबारका को बयान करते हुए ये कहा कि '' जो आप को अचानक देखता वो आपके रोअब दाब से डर जाता। और जो पहचानने के बाद आप से मिलता तो वो आपसे महब्बत करने लगता था।(शमाइले तिर्मिजी स. २)। हज़रते बरा बिन आज़िब रजियल्लाहु अन्हु का कौल है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तमाम इन्सानों से बढ़कर खूबरू और सब से ज्यादा अच्छे अख्लाक वाले थे। (बुख़ारी जि.१ स. ५०२ बाब सफतुन्नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)। हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम रजियल्लाहु अन्हु ने आपके चेहरए अनवर के बारे में ये कहा कि'' मैंने जब हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के चेहरए अनवर को बगौर देखा तो मैं ने पहचान लिया कि आपका चेहरा किसी झूटे आदमी का चेहरा नहीं है।(मिश्कात जि.१ स. १६८ बाब फजलुस सदका)

अरबी ज़बान में भी किसी मद्दाहे रसूल ने आपके रुखे अनवर के हुस्न– जमाल का कितना हसीन मंज़र और कितनी बेहतरीन तशबीह पेश की है ''हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हुस्नजमाल के भी नबी हैं। यूँ तो उनकी हर हर चीज़ हुस्न का मुअजिजा है। लेकिन खास कर उनका चेहरा तो आयते कुबरा (बहुत ही बड़ा मुअजजा) है। उनके रुख्सार के सिहन में उनके तल का बिलाल उनकी रौशन पेशानी की चमक से सुबह सादिक को देखकर अज़ान कहा करता है।

महराबे अबरू

आपकी भवें दराज व बारीक और घने बाल वाली थीं। और दोनों भवें इस कदर मुत्तसल थीं कि दूर से दोनों मिली हुई मालूम होती थीं। और उन दोनों भवों के दर्मियान एक रग थी जो गुस्से के वक्त उभर जाती थी। (शमाइले तिर्मिजी स. २)

नूरानी आँख

आपकी चश्माने मुबारक बड़ी बड़ी, और कुदरती तौर पर सुरमगीं थीं। पलकें घनी और दराज़ थीं। पुतली की सियाही खूब सियाह, और आँख की सफेदी खूब सफेद थी जिन में बारीक बारीक सुर्ख डोरे थे। (शमाइले तिर्मिजी स. २ व दलाएलुन्नुबूव्वत स. ५४) आपकी मुकद्दस आँखों का ये एअजाज़ है कि आप ब–यक वक्त आगे, पीछे, दाएँ बाएँ, ऊपर नीचे, दिन, रात, अंधेरे, उजाले में यकसाँ देखा करते थे। (जरकानी अलल मवाहिब जि. ५ स. २४६ व खसाइसे कुबरा जि.१ स. ६१)

चुनान्चे बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायात में आया है कि

(मिश्कात स. ८२ बाबुर रुकूअ)'' ऐ लोगो! तुम रुकूअ व सुजूद को दुरुस्त तरीके से अदा करे। क्योंकि खुदा की कसम! मैं तुम लोगों को अपने पीछे से भी देखता रहता हूँ।''साहिबे मिरकात ने इस हदीस की शरह में फरमाया कि (हाशिया मिश्कात स. ८२ बाबुर रुकूअ) ये बात आपके उन मुअजजात में से है जो आप को अता किए गए है।

फिर आप की आँखों का देखना महसूसात ही तक महदूद नहीं था बल्कि आप गैर मरई (जो छुवा न जा सके) व गैर महसूस (जो महसूस न की जा सके) चीजों को भी जो आँखों से देखने के लाएक ही नहीं हैं देख लिया करते थे। चुनान्चे बुखारी शरीफ़ की एक रिवायत है कि (बुखारी जि.१ स.५९) खुदा की क़सम तुम्हारा रुकूअ व खुशूअ मेरी निगाहों से पोशीदा नहीं रहता। सुब्हा–नल्लाह!प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नूरानी आँखों के एअजाज़ का क्या कहना? कि पीठ के पीछे से नमाजियों के रुकूअ बल्कि उनके खुशूअ को भी देख रहे हैं। खुशूअ क्या चीज़ है? खुशूअ दिल में ख़ौफ़ और आजिज़ी की एक कैफियत का नाम है तो आँख से देखने की चीज़ ही नहीं है। मगर निगाहे नुबूव्वत का ये मुअजजा देखो कि ऐसी चीज़ को भी आपने अपनी आँखों से देख लिया जो आँख से देखने के काबिल ही नहीं है। सुब्हा–नल्लाह! चश्माने मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के एअजाज़ की शान क्या कोई बयान कर सकता है?

बीनी मुबारक

आपकी मुतबर्रक नाक खूबसूरत, दराज, और बुलन्द थी जिस पर एक नूर चमकता था जो शख्स बगौर नहीं देखता था वो ये समझता था कि आकी मुबारक नाक बहुत ऊँची न थी। बल्कि बुलन्दी उस नूर की वजह से महसूस होती थी जो आपकी मुक़द्दस नाक के ऊपर जल्वा फिगन था। (शमाइले तिर्मिज़ी स. २ वगैरा)

मुकद्दस पेशानी

हज़रते हन्द बिन अबी हाला रजियल्लाहु अन्हु आपके चेहरए अनवर का हुलिया बयान करते हैं कि वासेउल जबीन यानी आपकी मुबारक पेशानी कुशादा और चौड़ी थी। (शमाइले तिर्मिज़ी स. २) कुदरती तौर से आपकी पेशानी पर एक नूरानी चमक थी। चुनान्चे दरबारे रिसालत के शाओर मद्दाहे रसूल हज़रते हस्सान बिन साबित रजियल्लाहु अन्हु ने इसी हसीनो जमील नूरानी मंज़र देखकर ये कहा है कि ''जब अंधेरी रात में आपकी मुक़द्दस पेशानी जाहिर होती है तो इस तरह चमकती है जिस तरह रात की तारीकी में रौशन चराग चमकते हैं।''

गोशे मुबारक

आपकी आँखों की तरह आपके कान में भी मुअजज़ाना शान थी। चुनान्चे आपने खुद अपनी ज़बाने अकदस से इर्शाद फ़रमाया कि:(खसाइसे कुबरा जि.१ स ६७) ''मैं उन चीजों को देखता हूँ जिनको तुम में से कोई नहीं देखता। और मैं उन आवाज़ों को सुनता हूँ जिन को तुम में से कोई नहीं सुनता।''इस हदीस से साबित होता है कि आप के समअ व बसर की कुव्वत बे मिसाल, और मुअजज़ाना शान रखती थी क्योंकि आप दूर– नज़दीक की आवाज़ों को यकसाँ तौर पर सुन लिया करते थे। चुनान्चे आप के हलीफ़ बनी खुजाआ ने जैसाकि फ़तहे मक्का के बयान में आप पढ़ चुके हैं तीन दिन की मसाफ़त से आप को अपनी इमदाद व नुसरत के लिए पुकारा तो आपने उनकी फ़रियाद सुन ली। अल्लामा ज़रकानी ने इस हदीस की शरह में फ़रमाया कि'' अगर हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन दिन की मसाफ़त से एक फरियादी की फरियाद सुन ली तो ये आप से कोई बईद नहीं है क्योंकि आप तो ज़मीन पर बैठे हुए आस्मानों की चर चराहट को सुन लिया करते थे बल्कि अर्श के नीचे चाँद के सज्दा में गिरने की आवाज़ को भी सुन लिया करते थे। (खसाइसे कुबरा जि.१ स. ५३ व हाशिया अद्दौलतुल मक्कीया स.१.०)

दहन शरीफ

हज़रते हन्द बिन अबी हाला रजियल्लाहु अन्हु का बयान है कि आप के रुख्सार नर्म व नाजुक और हमवार थे और का आप मुँहफ़राख, दाँत कुशादा और रौशन थे। जब आप गुफ्तगू फ़रमाते तो आप के दोनों अगले दाँतों के दर्मियान से एक नूर निकलता था। और जब कभी अंधेरे में आप मुस्कुरा देते तो दन्दाने मुबारक की चमक से रौशनी हो जाती थी। (शमाइले तिर्मिज़ी स. २ व ख़साइसे कुबरा जि.१ स.७४) आपको कभी जमाई नहीं आई। और ये तमाम

अंबिया अलैहिमुस्सलाम का ख़ास्सा है कि उनको कभी जमाई नहीं आती क्यों जमाई शैतान की तरफ़ से हुआ करती है। और हज़रात अंबिया अलैहिमुस्सलाम शैतान के तसल्लुत से महफ़ूज़ व मअसूम है।(जरकानी जि.५ स.२४८)

ज़बाने अकदस

आप की मुक़द्दस ज़बान वहीए इलाही की तर्जमान,और सर चश्मए आयात व मख़जने मुअजजात है। इस की फ़साहत व बलागत इस कदर हद्दे एअजाज को पहुँची हुई है कि बड़े बड़े फ़ुसहा व बलगा आपके कलाम को सुन कर दंग रह जाते थे । आपकी मुकद्दस जबान की हुकमरानी और शान का ये एअजाज था कि ज़बान से जो फ़रमा दिया वो एक आन में मुअजजा बन कर आलमे वजूद में आ गया।

लुआबे दहन

आप का लुआब दहन (थूक) जख्मियों और बीमारों के लिए शिफा, और ज़हरों के लिए तिर्याक अअज़म था। चुनान्चे आ मुअजजात के बयान में पढ़ेंगे कि हज़रते अबू बकर सिद्दीक रजियल्लाहु अन्हु के पाँव में गारे सौर के अन्दर साँप ने काटा। उस का जहर आपके लुआबे दहन से उतर गया और जख्म अच्छा हो गया। हज़रते अली रजियल्लाहु अन्हु के आशोबे चश्म के लिए ये लुआबे दहन शिफाउल जैन बन गया। हज़रते रिफ़ाआ बिन राफेअ रजियल्लाहु अन्हु की आँख में जंग बदर के दिन तीर लगा और फूट गई। मगर आपके लुआबे दहन से ऐसी शिफ़ा हासिल हुई कि दर्द भी जाता रहा। और आँख की रौशनी भी बरकरार रही।

(जादुल मआद गजवए बंदर) हज़रते अबू कतादा रजियल्लाहु अन्हु के चेहरे पर तीर लगा। आपने उसपर अपना लुआबे दहन लगा दिया। फौरन ही खून बंद हो गया। और फिर जिन्दगी भर उनको कभी तीरतलवार का ज़ख्म न लगा।(असाबा तज्किरए अबू कतादा) शिफ़ा के अलावा और भी लुआबे दहन से बड़ी बड़ी मुअजज़ाना बरकात का जुहूर हुआ। चुनान्चे हजरते अनस रजियल्लाहु अन्हु के घर में एक कुवाँ था। आपने उस में अपना लुआबे दहन डाल दिया तो उस का पानी इतना शीरी हो गया कि मदीना मुनव्वरा में उस से बढ़कर कोई शीरीं कुवाँ न था।(जरकानी जि.५ स. २४६) इमाम बैहकी ने ये हदीस रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आशूरा के दिन दूध पीते बच्चों को बुलाते थे और उनके मुँह में अपना लुआबे दहन डाल देते थे और उनकी माओं को हुक्म देते थे कि वो रात तक अपने बच्चों को दूध न पिलाएँ। आप का यही लुआबे दहन उन बच्चों को इस कदर शिकम सैर और सैराब कर देता था कि उन बच्चों को दिन भर न भूक लगती थी न प्यास। (जरकानी जि.५ स. २४६)

आवाज़े मुबारक

ये हज़रात अंबिया किराम के ख़साइस में से है कि वो खूबसूरत और खुश आवाज़ होते हैं। लेकिन हुजूर सय्येदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम से ज़्यादा खुबूरू और सब से बढ़कर खुश गो, खुश आवाज़ और खुश कलाम थे। खुश आवाज़ी के साथ साथ इस कदर बुलन्द बावाज़ भी थे कि खुत्बों में दूर और नज्दीक वाले सब यकसाँ अपनी अपनी जगह पर आप का मुकद्दस कलाम सुन लिया करते थे।(जरकानी जि.४ स. १७८)

पुर नूर गर्दन

हज़रते हन्द बिन अबी हाला रजियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की गर्दने मुबारक निहायत ही मुअतदिल, सुराहीदार और सुडोल थी । खूबसूरती और सफाई में निहायत ही बे मिस्ल, खूबसूरत और चाँद की तरह साफ़– शफ्फ़ाफ़ थी। (शमाइले तिर्मिज़ी स. २)

दस्ते रहमत

आपकी मुक़द्दस हथेलियाँ चौड़ी, पुर गोश्त , कलाईयाँ लम्बी, बाजूदार, और गोश्त से भरे हुए थे। (शमाइले तिर्मिज़ी स.२) हज़रते अनस रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने किसी रेशम और दीबा को आपकी हथेलियों से ज़्यादा नर्म व नाजुक नहीं पाया। (बुख़ारी जि.१ स.५०३ बाब सिफतुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व मुस्लिम जि.२ स २५७) जिस शख्स से आप मुसाफ़हा फरमाते वो दिन भर अपने हाथों को खुश्बूदार पाता। जिस बच्चे के सर पर आप अपना दस्ते अकदस फिरा देते थे वो खुश्बू में तमाम बच्चों से मुमताज़ होता। हज़रते जाबिर बिन समुरा रजियल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैंने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम के साथ नमाजे जुहर अदा की। फिर आप अपने घर की तरफ रवाना हुए और मैं भी आपके साथ ही निकला। आपको देखकर छोटे छोटे बच्चे आपकी तरफ दौड़ पड़े। तो उनमें से हर एक के रुख्सार पर अपना दस्ते रहमत फेरने लगे। मैं सामने आया तो मेरे रुख्सार पर भी आप ने अपना दस्ते मुबारक लगा दिया। तो मैं ने अपने गालों पर आपके दस्ते रहमत की ठन्डक महसूस की। और ऐसी खुश्बू आई कि गोया आप ने अपना हाथ किसी इत्र फ़रोश की सन्दूकची में से निकाला है।**(मुस्लिम जि.२ स.२५६ बाब तय्यब रीहा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)** इस दस्ते मुबारक से कैसे कैसे मुअजजात और तसर्रुफ़ात आलमे जुहूर में आए ।

शिकम व सीना

आप का शिकम और सीनए अकदस दोनों हमवार और बराबर थे। न सीना शिकम से ऊँचा था। न शिकम सीने से। आप का सीना चौड़ा था और सीने के ऊपरी हिस्से से नाफ़ तक मुकद्दस बालों की एक पतली सी लकीर चली गई थी। मुकद्दस छातियाँ और पूरा शिकम बालों से ख़ाली था, हाँ शानों और कलाईयों पर क़द्रे बाल थे।**(शमाइले तिर्मिज़ी स. २)** आप का शिकम सब कनाअत की एक दुनिया और आपका सीना मरिफ़ते इलाही के अनवार का सफ़ीना और वहीए इलाही का गंजीना था।

पाए अकदस

आपके मुक़द्दस पावँ चौड़े, पुर गोश्त, एड़ियाँ कम गोश्त वाली, तलवा ऊँचा जो जमीन से न लगता था। दोनों पिन्डलियाँ कद्रे पतली और साफ़ व शफ्फ़ाफ, पावँ की नर्मी और नज़ाकत का ये आलम था कि उन पर पानी ज़रा भी नहीं ठहरता था। **(शमाइले तिर्मिज़ी स. २ व मदारिजुन्नुबूब्बत वगैरा)**
आप चलने में बहुत ही वकार व तवाजोअ के साथ कदम शरीफ़ को ज़मीन पर रखते थे। हज़रते अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु का बयान है कि चलने में मैंने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से बढ़कर तेज़ रफ्तार किसी को नहीं देखा। गोया ज़मीन आपके लिए लपेटी जाती थी। हम लोग आप के साथ दौड़ा करते थे और तेज़ चलने से मशक्कत में पड़ जाते थे। मगर आप निहायत ही वकार व सुकून के साथ चलते रहते थे। मगर फिर भी हम सब लोगों से आगे ही रहते थे। **(शमाइले तिर्मिज़ी स. २ वगैरा)**

तिब्बे नबवी स्व०

बरकत हासिल करने का अमल

उमदतुल अहकाम में रिवायत है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि '' ऐ लोगो ! जमा होकर खाना खाया करो। इस तरह अल्लाह बरकत अता करेगा। हज़रत जाबिर रजि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने फरमाया कि सबसे बेहतर और उम्दा खाना वह है जिसमें ज़्यादा हाथ डाले जाएं और हुजूर सल्ल० का इर्शाद है कि सबके साथ खाने में शिफा है और इर्शाद है कि बहुत बुरे वे लोग हैं जो अकेले खाएं और अपनी लौंडी को मारें और अपनी बख्शिश को बन्द करें और निकाह करें हाथ से अर्थात् जलक (मुश्तज़नी) करें। बुसतान में है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि खाना ठंढा करके खाना चाहिए क्योंकि गर्म खाने में बरकत नहीं होती। कुछ किताबों में लिखा है कि गर्म खाने से मेअदा कमज़ोर हो जाता है।

खाना हजम होने का इलाज इलाज

अबू दाऊद में उम्मे मअबद रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने इर्शाद फरमाया कि सिरका बेहतरीन सालन है। ऐ खुदा! सिरके में बरकत अता कर। जामेअ कबीर में लिखा है कि सिरके में यह विशेषता है कि यह खाने को हज़म करता है। इब्ने हिब्बान ने अता से और उन्होंने हज़रत इब्ने अब्बास रजि० से रिवायत की है कि नबी सल्ल० के निकट तमाम सालनों में सबसे प्यारा सालन सिरका है। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि० से रिवायत है कि सिरका बेहतरीन सालन है और नबी करीम सल्ल० को हरी तरकारियां भी बहुत अधिक पसन्द थी। कन्जुल इबाद में है कि इसमें यह हिकमत है कि जिस दस्तरख्वान पर हरी तरकारी होती है वहां फरिश्ते आते हैं।

बदनज़री के नुकसानात



बदनज़री से इन्सान के मन के अन्दर इच्छाओं का तूफ़ान खड़ा हो जाता है और इन्सान भावनाओं की धारा में बह जाता है। उससे तीन बड़े नुकसान होते हैं।

१– बदनज़री की वजह से इन्सान के दिल में सपनों के महबूब का ख्याल पैदा हो जाता है। हसीन चेहरे उसके दिल व दिमाग पर कब्जा कर लेते हैं। वो व्यक्ति जानता है कि उन हसीन शक्लों तक उसकी पहुंच नहीं, मगर उसके बावजूद अकेले में वह ऐसे विचारो से आनन्दित होता है। कई बार तो घन्टों उनके साथ ख्यालों की दुनिया में बातें करता है। मामला इस हद तक बढ़ जाता है कि बदनज़री के साथ शैतान इन्सान के दिल व दिमाग पर सवार हो जाता है और उस व्यक्ति से शैतानी हरकतें करवाने में जल्दी करता है। जिस तरह वीरान और खाली जगह पर तेज आंधी अपना असर छोड़ती है उसी तरह शैतान भी उस व्यक्ति के दिल पर अपना असर छोड़ता है ताकि उस देखी हुई सूरत को खूब सजाकर उसके सामने पेश करे और उसके सामने एक खूबसूरत बुत बना दे। ऐसे लोगों का दिल दिन रात उसी बुत को पूजने में लगा रहता है। वह बेकार की इच्छाओं और अभिलाषाओं में उलझा रहता है। उसी का नाम हवस परस्ती, इच्छा परस्ती और नफ्स परस्ती है। अल्लाह तआला का इरशाद है: ''और उसका कहना न मान जिसका दिल हमने अपनी याद से गाफिल कर दिया और वह अपनी ख्वाहिश की पैरवी करता है और उसका काम हद से बढ़ गया है।''इन ख्याली माबूदों से जान छुड़ाये बगैर न तो ईमान की मिठास नसीब होती है और न अल्लाह के नजदीकी उत्पन्न होती है।

२ – बदनज़री का दूसरा नुकसान ये है कि इन्सान का दिल व दिमाग बहुत सी चीज़ों में बंट जाता है। यहां तक कि वो अपने फ़ायदे को भी भूल जाता है। घर में हसीन व जमील, नेक और वफादार बीवी मौजूद होती है, किन्तु उस व्यक्ति का दिल बीवी की तरफ आकर्षित ही नहीं होता। बीवी अच्छी नहीं लगती। ज़रा–ज़रा सी बात पर उलझता है। घर के माहौल में बदसुकूनी पैदा हो जाती है। जबकि यही व्यक्ति बेपर्दा घूमने वाली औरतों को ऐसी ललचाई हुई नज़रों से देखता है जिस तरह शिकारी कुत्ता अपने शिकार को देखता है। कभी–कभी तो ऐसे व्यक्ति का दिल काम में भी नहीं लगता। अगर छात्र है तो पढ़ाई के अलावा हर चीज़ अच्छी लगती है। अगर व्यापारी है तो व्यापार से दिल उकता जाता है। कई घन्टे सोता है मगर सुकून की नींद नहीं आती। देखने वाले समझते हैं कि सोया हुआ है जबकि वो ख्याली महबूब के ख्यालों में खोया हुआ होता है।

३– बदनज़री का तीसरा बड़ा नुकसान ये है कि दिल सही व गलत व सुन्नत व बिदअत में तमीज़ करने से आरी हो जाता है। दिल की निगाह की ताक़त छिन जाती है। दीन के इल्म व पहचान से महरूमी होने लगती है। गुनाह का काम उसको गुनाह नज़र नहीं आता। फिर ऐसी सूरत में दीन के बारे में शैतान इसको शक व शुब्हे में डाल देता है। उसे दीनी नेक लोगों से बदगुमानियां पैदा होने लगती हैं, यहां तक कि उसे दीनी शक्ल व सूरत वाले लोगों से ही नफ़रत हो जाती है। वह गलत होते हुए भी अपने आप को सही समझता है और आखिरकार ईमान से वंचित होकर दुनिया से जहन्नम रसीद कर दिया जाता है। अल्लाह हम सब की हिफाजत फ़रमाये। आमीन!



इत्तबाओ रसूले अकरम स्व०

हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नुबूव्वतरिसालत पर ईमान लाना और जो कुछ आप अल्लाह तआला की तरफ से लाए हैं सिद्क़ दिल से उस को सच्चा मानना हर हर उम्मती पर फर्जे जैन है। और हर मोमिन का उस पर ईमान है कि बिगैर रसूल पर ईमान लाए हुए हरगिज हरगिज़ कोई मुसलमान नहीं हो सकता। कुरआन में खुदावंद आलम जल्ले जलालुहू का फरमान है कि :जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान न लाया तो यकीनन हम ने काफिरों के लिए भड़कती हुई आग तय्यार कर रखी है। इस आयत ने निहायत वजाहत और सफ़ाई के साथ ये फैसला कर दिया कि जो लोग रसूल की रिसालत पर ईमान नहीं लाएँगे वो अगरचे खुदा की तौहीद का उम्र भर डंका बजाते रहें मगर वो काफिर और जहन्नमी ही रहेंगे। इस लिए इस्लाम का बुनियादी कलिमा यानी कलिमए तय्येबा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह है। यानी मुसलमान होने के लिए खुदा की तौहीद और रसूल की रिसालत दोनों पर ईमान लाना ज़रूरी है।

हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सीरते मुबारका और आप की सुन्नते मुक़द्दसा की इत्तिबाअ और पैरवी हर मुसलमान पर वाजिब व लाज़िम है। रब्बुल इज़्ज़त जल्ले जलालुहू का फरमान है कि: ''(ऐ रसूल) फ़रमा दीजिए कि अगर तुम लोग अल्लाह से महब्बत करते हो। तो मेरी इत्तिबा करो। अल्लाह तुम को अपना महबूब बनाएगा और तुम्हारे गुनाहों को बख्श देगा। और अल्लाह बहुत ज़्यादा बख़्शने वाला, और रहम फरमाने वाला है।'' इसी लिए आस्माने उम्मत के चमकते हुए सितारे, हिदायत के चाँद तारे, अल्लाह व रसूल के प्यारे सहाबए किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम आप की हर सुन्नते करीमा की इत्तिबाअ और पैरवी को अपनी जिन्दगी के हर दम, हर कदम.पर अपने लिए लाजिमुल ईमान और वाजिबुल अमल समझते थे और बाल बराबर भी कभी किसी मुआमला में भी अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुकद्दस सुन्नतों से इनहराफ या तर्क गवारा नहीं कर सकते थे। ये भी हर उम्मती पर रसूले खुदा स्व० का हक है कि हर उम्मती हर हाल में आप के हर हुक्म की इताअत करे। कुरआन मजीद में इर्शादे खुदावन्दी है कि:

१:'' हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का।''

२:'' जिसने रसूल का हुक्म माना, बेशक उसने अल्लाह का हुक्म माना।''

३:'' और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने तो उसे उनका साथ मिलेगा, जिनपर अल्लाह ने इनआम फरमाया। यानी अम्बिया और सिद्दीकीन और शहीद और नेक लोग ये क्या ही अच्छे साथी है।''



बिस्मिल्लाह की बरकतें

बिस्मिल्लाह से कुरआने करीम का आगाज़ करने की वजह

हज़रते अल्लामा अहमद सावी रह० फ़रमाते हैं : कुरआने करीम की इब्तिदा बिस्मिल्लाह से इस लिये की गई ताकि अल्लाह पाक के बन्दे इस की पैरवी करते हुए हर अच्छे काम की इब्तिदा बिस्मिल्लाह से करें । और हदीसे पाक में भी अच्छे और अहम काम की इब्तिदा बिस्मिल्लाह से करने की तरगीब दी गई है।

'अऊजुबिल्लाह' को बिस्मिल्लाह से पहले क्यूं पढ़ते हैं?

मुफस्सिरे कुरआन हज़रते मुफ्ती अहमद यार खान रह० फ़रमाते हैं : अऊजुबिल्लाह में बुरे अकाइद और बुरे आमाल से परहेज़ है और बिस्मिल्लाह (में) अच्छे अकाइद और अच्छे आ माल वगैरा को रब से हासिल करना है तो गोया वोह (यानी अऊजुबिल्लाह)परहेज़ के लिये था यह (यानी बिस्मिल्लाह) इलाज है और परहेज़ इलाज पर मुकद्दम है (यानी पहले होता है) पहले बीमारी को दफ्अ करो फिर मुक़ब्बियात का इस्तिमाल करो लिहाज़ा अऊजुबिल्लाह पहले पढ़ो और बिस्मिल्लाह बाद में। (तफ्सीरे नईमी, १/२९ मुल्तकृतन ब तग़य्युरे क़लील)

ज़बान जलने से महफ़ूज़ रहेगी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो और बहनों ग़ीबतों और गुनाहों भरी बातों से रिश्ता तोड़िये और अल्लाह पाक की यादों, मीठे मीठे मुस्तफ़ा स्व० की नातों से रिश्ता जोड़िये खूब दुरूदो सलाम के लिये ज़बान का इस्तिमाल कीजिये और खूब खूब तिलावते कुरआने पाक ए कीजिये और सवाब का ढेरों खज़ाना हासिल कीजिये। चुनान्चे रूहुल बयान में यह हदीसे कुदसी है : जिस ने एक बार बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम को अल हम्द शरीफ़ के साथ मिला कर पढ़ा तो तुम गवाह हो जाओ कि मैं ने उसे बख़्श दिया, उस की तमाम नेकियां कबूल फ़रमाई और उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये और उस की ज़बान को हरगिज़ न जलाऊंगा और उस को अज़ाबे क़ब्र, अज़ाबे नार, अज़ाबे कियामत और बड़े खौफ़ से नजात दूंगा।

तीन हजार नाम

मन्कूल है कि अल्लाह पाक के तीन हजार नाम हैं एक हज़ार नाम सिवाए फ़रिश्तों के कोई नहीं जानता और एक हज़ार नाम सिवाए अम्बियाए किराम के किसी को मालूम नहीं और तीन सो तौरात में हैं, तीन सो इन्जील में हैं, तीन सो ज़बूर में हैं और निनानवे नाम कुरआने करीम में हैं और एक नाम वोह है जिस को सिर्फ अल्लाह पाक ही जानता है। लेकिन बिस्मिल्लाह में रब्बे करीम के जो तीन नाम आए हैं (अल्लाह, रहमान और रहीम) इन तीन में उन तीन हज़ार के माना पाए जाते हैं लिहाजा जिस ने इन तीनों नामों से रब्बे करीम को याद किया गोया उस ने तमाम नामों से उस को याद किया। (तफ्सीरे नईमी, १/३१)

बिस्मिल्लाह की बरकत के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के १३ मदनी फूल

(१) हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन अली रह० शम्सुल : मआरिफ़ (उर्दू) के सफ़हा ३७ पर लिखते हैं : जो बिला नागा (यानी रोज़ाना) सात दिन तक **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** ७८६ बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ) पढ़े उस की हर हाजत पूरी हो । अब वोह हाजत ख्वाह किसी भलाई के पाने की हो या बुराई दूर होने की या कारोबार चलने की।**(शम्सुल मआरिफ़ (मुतर्जम), स. ३७)**

(२) जो किसी ज़ालिम के सामने **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** ५० बार (अव्वल आखिर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े उस ज़ालिम के दिल में पढ़ने वाले की हैबत पैदा हो और उस के शर से बचा रहे। **(ऐज़न, स. ३७)**

(३) जो शख्स तुलूए आफ्ताब के वक्त सूरज की तरफ रुख कर ! के **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** ३०० बार और दुरूद शरीफ़ ३०० बार पढ़े अल्लाह पाक उस को ऐसी जगह से रिज्क अता फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा और (रोज़ाना पढ़ने से) एक साल के अन्दर अन्दर अमीरो कबीर (यानी बड़ा मालदार) हो जाएगा। **(ऐज़न, स. ३७)**

(४) कुन्द जेहन अगर **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** ७८६ बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले तो उस का हाफ़िज़ा मजबूत हो जाए और जो बात सुने याद रहे। **(ऐज़न, स. ३७)**

(५) अगर कहत साली हो तो **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** ६१ बार (अव्वल आखिर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ें (फिर दुआ करें) बारिश होगी।**(ऐजन, स. ३७)**

(६, ७)**बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** कागज़ पर ३५ बार (अव्वल आखिर एक बार दुरूद शरीफ़) लिख कर घर में लटका दें शैतान का गुज़र न हो और खूब बरकत हो। अगर दुकान में लटकाएं तो कारोबार खूब चमके। **(ऐजन, स. ३८)**

(८) पहली मुहर्रमुल हराम को **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** १३० बार लिख कर (या लिखवा कर) जो कोई अपने पास रखे (या प्लास्टिक ! कोटिंग करवा कर कपड़े, रेग्जीन या चमड़े में सिलवा कर पहन ले)उम्र भर उस को या उस के घर में किसी को कोई बुराई न पहुंचे। **(ऐजन, स. ३८)** मस्अला : सोने या चांदी या किसी भी धात की डिबिया में तावीज़ पहनना मर्द को जाइज़ नही। इसी तरह किसी भी धात की जन्जीर ख्वाह उस में ता वीज़ हो या न हो मर्द को पहनना ना जाइज़ व गुनाह है। इसी तरह सोने, चांदी और स्टील वगैरा किसी भी धात की तख्ती या कड़ा जिस पर कुछ लिखा हुवा हो या न लिखा हुवा हो अगर्चे अल्लाह पाक का मुबारक नाम या कलिमए तय्यिबा वगैरा खुदाई किया हुवा हो उस का पहनना मर्द के लिये ना जाइज़ है। औरत सोने चांदी की डिबिया में तावीज़ पहन सकती है।

(९) जिस औरत के बच्चे जिन्दा न रहते हों वोह: **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** ६१ बार लिख कर (या लिखवा कर) अपने पास रखे (चाहे तो मोमजामा या प्लास्टिक कोटिंग कर के कपड़े, रेग्जीन या चमड़े में सी कर गले में पहन ले या बाजू में बांध ले।)बच्चे ज़िन्दा रहेंगे।**(ऐज़न, स. ३८)**

(१०) घर का दरवाज़ा बन्द करते वक्त याद कर के**बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** पढ़ लीजिये, शैतान (सरकश जिन्नात) घर में दाखिल न हो सकेंगे।

(११) रात को खाने पीने के बरतन बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर ढक दीजिये, अगर ढकने के लिये कोई चीज़ न हो तो **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** कह कर बरतन के मुंह पर तिन्का वगैरा रख दीजिये। मुस्लिम शरीफ की एक रिवायत में है कि साल में एक रात ऐसी आती है कि उस में वबा (यानी बीमारी) उतरती है जो बरतन छुपा हुवा नहीं है या मश्क का मुंह बंधा हुवा नहीं है अगर वहां से वोह वबा गुज़रती है तो उस में उतर जाती है।

(१२) सोने से कब्ल **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** पढ़ कर तीन बार बिस्तर झाड़ लीजिये, मूज़ियात (यानी ईज़ा देने वाली चीज़ों) से पनाह हासिल होगी।

(१३) कारोबार में जाइज़ लेनदेन के वक्त यानी जब किसी से लें तो , **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** पढ़ें और जब किसी को दें तो **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** कहें खूब बरकत होगी!



औरत का हुस्ने किरदार रूह की पाकीज़गी है

हर इंसान की ख्वाहिश होती है कि वह हमेशा तंदरुस्त रहे। इसी तरह ख़वातीन भी तंदरुस्त रहना चाहती है। मगर ख़वातीन में एक और भी जज़्बा होता है और वह है खूबसूरती बढ़ाने और शृंगार करने का। ये दोनों जज़्बे हमारे जिस्म से ताल्लुक रखते हैं, यानी तंदरुस्त रहने और खूबसूरती बढ़ाने का जज़्बा। मगर क्या कभी आपने यह भी सोचा है कि अपनी रूह की बालीदगी, रूह की सेहत और रूह के हुस्न के लिए आप क्या करती हैं ?

अमूमन देखा गया है कि इंसान अच्छी गिज़ा इस्तेमाल करता है, वरज़िश करता है, खूबसूरती बढ़ानेवाली मस्नूआत का इस्तेमाल करता है। ये सारी चीजें आपके जिस्म को तंदरुस्त और खूबसूरत बनाती हैं। इससे जिस्मानी आज़ा बेहतर तौर पर काम अंजाम देते हैं। अच्छी गिज़ा और अच्छे मेकअप के इस्तेमाल से चेहरे पर निखार आ जाता है और चेहरे के दाग–धब्बे दूर हो जाते हैं और हर फ़र्द आपकी तारीफ़ करने लगता है कि आपने क्या हुस्न व सेहत पाई है और ख़वातीन अपनी तारीफ़ सुनकर बहुत खुश होती है।

ख़वातीन को अगर हफ़्त अक़लीम भी मिल जाए तो उन्हें वह ख़ुशी नहीं होती जो किसी दूसरे से अपने हुस्न और सेहत की तारीफ़ सुनकर होती है। कहने का मतलब यह है कि हुस्न व सेहत से रूह का गहरा ताल्लुक़ है। आपके हुस्न और सेहतमंद जिस्म में एक रूह होती है जिसकी पाकीज़गी और खूबसूरती ज़्यादा माना रखती है बनिस्बत खूबसूरती और सेहतमंद जिस्म के रूह को पाकीज़ा रखने वाला इंसान ज़ाहिरी तौर पर भी खूबसूरत होता है और बातिनी तौर पर भी अपने हुस्ने अख़्लाक़ से दूसरों को मुत्मइन और खुश रखता है।

वह अपने बर्ताव से, अपनी आदतों से दूसरों में न सिर्फ़ मक़बूल होता है, बल्कि लोग उसका एहतिराम और इज़्ज़त करते हैं। अमूमन ऐसे लोगों में यह भी देखा गया है कि वह बड़ी–से–बड़ी मुश्किलों में होने के बावजूद अपनी जिंदगी मामूल के मुताबिक़ गुज़ारते हैं और किसी को एहसास तक नहीं होने देते कि इन्हें किसी बात की तकलीफ़ है, चाहे उन्हें कोई बड़ी बीमारी हो, माली तंगी का सामना हो या किसी और बात की परेशानी हो। वह बिल्कुल अपना काम उसी अंदाज़ में अंजाम देते हैं जिस तरह वह अपनी सेहतमंद ज़िंदगी में अंजाम दिया करते थे।

रूह की पाकीज़गी रखने वाले अपना काम ख़ुद करते हैं, हर वक़्त खुश व खुर्रम नज़र आते हैं। किसी मेकअप के बगैर उनका हुस्न पुरनूर होता है पेशानी चमकती है। ऐसा क्यों होता है, कभी गौर किया है आपने? यह सिर्फ इसलिए होता है कि वे रूह की

पाकीज़गी पर यक़ीन रखते है। ऐसे लोग अपने जिस्म और हुस्न से ज़्यादा अपनी रूह की परवरिश करते है। उन्हें संवारते हैं, सजाते हैं। रूह की खूबसूरती और गिज़ा इबादत है। नेक और सालेह इंसान अपनी रूह को गिज़ा किस तरह देता है यह भी गौर तलब बात है। मसलन एक माँ अपने बच्चे की सेहत और तालीम व तर्बियत से मुताल्लिक़ हमेशा कोशाँ रहती है। बच्चा ज़रा–सा बीमार पड़ जाए तो वह रात–भर बैठकर उसकी तीमारदारी करती है। ख़ुदा की बारगाह में उसकी सेहत और तंदुरुस्ती के लिए गिड़गिड़ाती है और जब बच्चा खुश और सेहतमंद होता है तो उसकी रूह को अपने आप गिज़ा मिल जाती है।

इसी तरह रूह की पाकीज़गी हमें उन लोगों में भी दिखाई देती है जो अपने ग़मों से ज़्यादा दूसरों के दुख को अपना समझते हैं और उनकी हर मुमकिन मदद करते है। गोया दूसरों की मदद करना भी रूह की पाकीज़गी की अलामत है। खुश नसीब होते हैं वे लोग जिन्हें अपनी रूह की परवरिश करना आता है, जो अपनी रूह को दूसरों की ग़ीबत, चुगली, कीना, झूठ, बुग्ज़ जैसे अमराज़ में मुब्तला नहीं करते। जो सिर्फ अपने नफ़्स को सुकून नहीं पहुँचाते बल्कि अपने नफ़्स पर क़ाबू पाते हुए दूसरों के लिए आसानियाँ पैदा करते हैं।

ऐसे लोग जो दूसरों की तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ समझते हैं, दूसरों की मदद करते हैं, अपनी खुशियों का गला घोंटकर दूसरों को सुख पहुँचाते हैं और अपने नफ़्स पर हर मुमकिन क़ाबू पाते हैं, वही इंसान पाकीज़ा रूह रखते हैं। नफ़्स इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन है। इंसान पर ज़लज़ले सैलाब वग़ैरह जैसे अज़ाब नाज़िल हुआ करते हैं, तबाही और बर्बादी को इंसान खुद ही दावत देता है। मगर हम यह सारी बातें मानने से इंकार करते हैं और ख़्वाबे ख़रगोश में मुब्तला रहते हैं। जिन गुनाहों के सबब हम पर अज़ाब आया उन गुनाहों से हम फिर भी तौबा नहीं करते।

मेरी मुखातब तो ख़ास ख़वातीन है। औरतें गो कि मलिका हैं, अगर वे चाहें कि उनका घर गुनाहों से पाक रहे तो रह सकता है। अब भी वक़्त है, अपना मुहासबा करें। अपनी बीमार रूह का इलाज करें। जितना हमारा जिस्म तंदरुस्त है रूह को भी उतना ही सेहतमंद बनाएँ। आप जानती हैं कि रूह की बालीदगी के लिए क्या करना है। इससे पहले की हम पर कोई आफ़त आए, माफ़ी माँग कर अपने आपको आने वाले रौशन मुस्तकबिल के लिए तैयार कर लें। दूसरों से अपना मुक़ाबला न करें, दूसरों ने कुरआन मजीद जैसे लाइह–ए–अमल को पढ़ा ही नहीं है। वह इस्लाम की चाशनी से रौशनास ही नहीं हुए हैं। वे अगर प्यासे हैं तो मजबूर हैं, दरिया उनसे काफ़ी दूर है। मगर हम तो दरिया के क़रीब रहकर भी प्यासे है।

रूह की प्यास बुझाना कोई बहुत बड़ा अमल नहीं है और न ही बहुत बड़ा काम है। इंसान को अपनी रूह की खूबसूरती और सेहत के लिए सिर्फ और सिर्फ अपने नफ़्स पर काबू पाने की ज़रूरत है। आज अगर हमारी रूह ज़ख़्मी है तो उसकी वजह भी हम खुद ही हैं कि हमने घरों में नहूसतें पाल रखी है। अपनों से नाता तोड़ लिया है। मुहब्बत को बालाए ताक़ रख दिया है, दौलत के पुजारी हैं, उरयानियत को अपना सरमाय–एजिंदगी बना लिया है। इंसानी जिस्म में अगर यह सारी खुराफ़ात मौजूद हैं तो उसकी रूह कभी खूबसूरत और पाकीज़ा नहीं हो सकती, भले ही जिस्मानी शक्ल व सूरत में खूबसूरत दिखाई देते हों। लेकिन उसकी कोई वक़्अत नहीं होती।

क्योंकि जिस इंसान के दिल में किसी और के लिए हमदर्दी न हो, दूसरों के लिए प्यार न हो, कुरबानी का जज़्बा न हो, वह न तो जिस्मानी तौर पर खूबसूरत कहलाता है और न रूहानी तौर पर खूबसूरत हो सकता है। रूह का सारा हुस्न इबादत, तक़्वा और परहेज़गारी पर मुंहसिर होता है। इंसान पर जहाँ अल्लाह तआला की इबादत फ़र्ज़ है वहीं एक इंसान के लिए दूसरे इंसान के तईं हमदर्दी और भाई–चारगी और इज़्ज़त व एहतिराम का जज़्बा भी लाज़मी करार दिया गया है।

अगर यह सारी खूबियाँ इंसान में न हों तो वह दुनिया में भी ज़लील व ख्वार होगा और आख़िरत में भी। इसलिए इंसान को चाहिए कि वह अपने जिस्म और हुस्न की खूबसूरती के साथ–साथ रूह को सेहतमंद और पाकीज़ा बनाने की कोशिश करे।

इल्म को छुपाना

जो लोग कामचोर होते हैं, जद्दोजहद का मिजाज नहीं रखते, ज़िम्मेदारी से भागना चाहते हैं, वह हकीकत में आयतों को छुपाते हैं, ताकि उनपर कोई इल्जाम न आए, मुनाफिकत के साथ आराम की जिंदगी गुजारने के लिए उनको वजहे जवाज़ भी मिले। यहूदी जद्दोजहद करने वाली कौम नहीं थे, इसलिए जिम्मेदारी से बचने के लिए आयतों को छुपाने को पूरा दरवाजा उन्होंने खोल लिया था, मजीद हासिद भी थे, अगर तौरेत की आयतों से किसी कौम की फजीलत मालूम होती तो उस कौम को गिराने के लिए उन्होंने यह मज़मूम तरीका ईजाद किया था कि आयतों को छिपा–छिपा कर अपनी दीनी चौधराहट को बरकरार रखा जाए, अपने सिलसिले के अम्बिया के अलावा वह किसी और नबी की फजीलत उनको गवारा नहीं थी, बल्कि खुद अपने अम्बिया का कोई साफ–शफ्फाफ अमल उनकी नफ्सानियत की गन्दगी का साथ नहीं तो उनसे मुताल्लिक भी आयतों को छिपाने या बदलने की कोशिशें करते।

खासकर रसूलुल्लाह (स०अ०व०) और उम्मते मुस्लिमा के ताल्लुक से उन्होंने हद ही कर डाली। उन तमाम आयतों को पहले छिपाया, फिर मिटाया जो रसूलुल्लाह (स०अ०व०) और आपके असहाब के बारे में थी। ज़बीहुल्लाह जो हकीकत में हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) थे, उनसे यह फजीलत छीनकर अपने अपने जद्दे अमजद हजरत इस्हाक को दी। जिन हुक्मों पर अमल करना दुश्वार होता उन आयतों को छिपाने में उनको कोई आर नहीं था। खुद उनके उलमा ने तौरेत की शरह के नाम पर जो तलमूद तैयार की है वह तहरीफ व कितमान बल्कि तालीते आयात का एक अजूबा है, मजीद उसे दीनी रंग देने के लिए यह बोहतान भी अपने सर लिया कि तौरेत की जो तश्रीह उनके मन में आएगी वह करेंगे और वही मन्शा–ए–इलाही करार पाएगी, भले उससे तौरेत की खुल्लमखुल्ला नाफरमानी लाज़िम आए। कित्मान, बोहतान, तहरीफ़, तरमीम, हज़फ व इज़ाफ़ा और पता नहीं क्या कुछ, अल्लाह की किताब तौरेत के साथ यहूदियों ने ऐसा बदतरीन जुल्म किया। मगर अफ़सोस की बात है फिर भी वह अपने आप को अल्लाह के लाडले कहते रहे, उनकी पूरी तारीख़ ''फज़्ज़लतुकुम अलल आलमीन'' से शुरू होकर ''जुरिबत अलैहिमुज़्ज़िल्लतु व मस्कनतु'' पर ख़त्म होती है। कुरआन मजीद में बहुत सी जगहों पर उनके जुर्म बयान किये गए हैं, एक जगह है:'' यकीनन वह लोग जो हमारी उतारी हुई खुली निशानियों को और हिदायत को छिपाते हैं बावजूद यह कि हमने उसको लोगों के लिए किताब में साफ–साफ़ बयान कर दिया है, यही वह लोग हैं अल्लाह जिन पर लानत करता है और लानत करने वाले उन पर लानत करते हैं।'' (सूरह बकराः १५९)

ज़रूरत के वक्त किसी चीज़ को छिपाने का कित्मान है। छिपाने वाले यहूद थे, यहूद ने बहुत कुछ छिपाया, वह खूब जानते थे कि अगर उनके औसाफ़ को जाहिर किया गया तो खुद उनके लिहाज़ से रसूलुल्लाह (स०अ०व०) की हक्कानियत ज़ाहिर हो जाएगी और पूरी कौम के लिए ईमान लाना ज़रूरी हो जाएगा, वरना सबकी निगाहों से गिर जाएंगे, इसका इलाज उन्होंने यह सोचा कि उन आयतों ही को छिपाया जाए जिनसे रसूलुल्लाह (स०अ०व०) की हक्कानियत ज़ाहिर होती है। इस तरह इन्सानों में झूठी इज़्ज़त पाने के लिए अल्लाह की नजरों से

गिरना गवारा कर लिया, यह इन्तिहा दर्जा हैरत अंगेज़ बात थी जिनको खुसूसी तौर पर 'उसको सबसे पहले झुठलाने वाले न बनो कहा गया था, उन्होंने ही बढ़चढ़ कर झुठलाया, अल्लाह की आयतों से खिलवाड़ किया और झूठी इज़्ज़त की तलाश में हमेशा की लानत का तौक पहन लिया।

आयत में फिल किताब से मुराद तौरेत है, वह अल्लाह की किताब थी, लोगों के लिए उतरी थी। उन बदबातिनों ने आयतों को छिपाकर अल्लाह की किताब की हिदायत से अल्लाह के बन्दों को रोका, यह दोहरे मुजरिम थे, कित्माने आयात के और सदअन सबीलुल्लाह के, अल्लाह की आयतों को छिपाने के नतीजे में अल्लाह की लानत के मुस्तहिक बने और हर-हर लानत करने वालों की लानत के मुस्तहिक हुए। लानत का मतलब धुत्कार कर दूर करने का है। अल्लाह की लानत का मतलब है कि अल्लाह उनसे बेज़ार और वह अल्लाह के सवाब और उसकी मुहब्बत से महरूम हैं।

एक और जगह इस आयत की मजीद तश्रीह है, अल्लाह की तरफ से अहले किताब को यह हुक्म था कि तमाम लोगों के सामने किताब खोल कर रखें: ''वह वक्त काबिले जिक्र है जब अल्लाह ने अहले किताब से वादा लिया था कि वह जरूर किताब को लोगों के सामने खूब बयान करेंगे और उसे कतअन नहीं छिपाएंगे, लेकिन उन्होंने उस वादे को पीठ पीछे डाल दिया और एक हकीर कीमत के एवज उस वादे को बेच दिया, कितनी बुरी चीज़ है जिसे वह खरीदे जा रहे हैं।

इस अहद का जिक्र मौजूदा बदली हुई तौरेत में भी चला आ रहा है: ''मैं तुम्हें जो हुक्म देता हूं उसमें न तो कुछ इजाफा करना और न उसमें से कुछ घटाना, बल्कि खुदावन्द! तुम्हारे खुदा के जो हुक्म हैं तुम्हें दे रहा हूं, उनके पाबन्द रहना।'' (इस्तिस्नाः २/४)

''तुम यह बातें अपनी औलाद और उनके बाद उनकी औलाद को सिखाओ।'' (इस्तिस्ना: ९/४९)

''यह एहकाम जो आज मैं तुम्हें दे रहा हूं तुम्हारे दिल पर नक्श हों, तुम उन्हें अपनी औलाद के जहन नशीन करो, जब तुम घर में बैठे हो या राह चलते हो या लेटे हो या जब उठो तो उनका जिक्र करते रहा करो।''(इस्तिस्ना: ८/६)

'' मेरे इन अल्फाज को अपने दिल व दिमाग पर नक्श कर लो और निशान के तौर पर उन्हें अपने हाथों पर बांध लो और अपनी पेशानियों पर टीकों की तरह लगा लो, जब तुम घर में बैठे हो और तुम राह पर चलते हो और जब तुम लेटे हो और जब तुम उठो तो उनका जिक्र करते हुए उन्हें अपने बच्चों का सिखाओ।'' (इस्तिस्नाः ११/१९-२०)

'' लेकिन अगर मेरी न सुनोगे और उन सब एहकाम पर अमल न करोगे और मेरी शरीअत को मुस्तरद कर दोगे और मेरे कवानीन से नफरत करोगे, मेरे एहकाम की तामील में नाकाम रहोगे और यूं मेरे अहद की खिलाफवर्जी करोगे तो मैं तुम्हारे साथ इस तरह पेश आऊंगा कि नागहानी दहशत, घुलाने वाली बीमारियां और बुख़ार तुममें भेज दूंगा जो तुम्हारी बीनाई को तबाह करेंगे और तुम्हारी जान ले लेंगे।'' (अहबारः २६/१५-१६)

यहूद के ताल्लुक से खुद उनकी किताब की तरीहात आपने मुलाहिजा की, इसके अलावा ऊपर बयान की गई कुरआनी आयात में हुक्मे आम है, लिहाज़ा जो भी वक्ते जरूरत सही बात नहीं बताएगा, वह उस आयत की वईद में शामिल होगा। रसूलुल्लाह (स०अ०व०) का इरशाद है: ''किसी से किसी इल्म के बारे में पूछा जाए और उसे वह छिपाए तो कयामत के दिन (उसके मुंह पर) आग की लगाम कस दी जाएगी।'' (अबूदाऊदः ३६५८)

आग की यह लगाम मुंह पर इसलिए कस दी जाएगी कि जो मुंह अल्लाह के इल्म के लिए खुल न सका, उसके लिए आग की लगाम ही मुनासिब है। अलबत्ता यह बात वाजेह रहे कि लोगों के सामने दकीक बातें पेश करना जिनकी उनको ज़रूरत नहीं, बल्कि उन बातों से उल्टे उनके ज़हन में गलत-सलत शक-शुब्हा पैदा हो यह बिल्कुल सही नही है, इन बातों को जाहिर न करना कित्माने इल्म में शामिल नहीं, इसलिए कि अल्लाह तआला ने मजकूरा आयत में 'अलबैय्यनात वल हुदा' को वाज़ेह करने का हुक्म दिया है, इसीलिए हजरत अली (रजि०) फ़रमाते थे:''लोगों से उनकी अक्ली सतह को देखकर बात करो, क्या तुम यह चाहते हो कि अल्लाह व रसूल को झुठलाया जाए।''



सच्चाई क्या है?

सच और झूठ की तासीर

हज़रत हसन बिन अली (रजि०) से रिवायत है कि मुझे नबी करीम (स०) की यह बात याद है कि आप (स०) ने फरमायाः जिस चीज़ में तुमको शक हो उसको छोड़ दो और उसको अख्तियार करो जिसमें तुमको शक न हो, सच्चाई में इत्मिनान है और झूठ में बेइत्मिनानी है।'' (सुनन तिरमिजी: २५१८)

हज़रत हसन (रजि०) ने रसूलुल्लाह (स०) की एक हदीस नकल की कि जो चीज़ तुम्हारे अन्दर खटक पैदा करती है, उसको छोड़कर वह चीज़ अखियार करो जो चीज तुम्हारे सीने में न खटके और तुम बेखौफ वह बात कुबूल कर सको। यह एक बुनियादी उसूल है कि गलती खटकती है और सच हजम हो जाता है। अच्छी बात आदमी के अन्दर आसानी से उतर जाती है और जो गलत बात होती है वह दिल में बहरहाल खटकती है, चाहे वह कौल हो या चाहे वह अमल हो। आदमी बहुत सारे ऐसे काम करता है, जो करता तो है लेकिन दिल उस बात पर खटकता रहता है कि ठीक है या नहीं, फिर सोचता है कि कर लेते हैं इसमें क्या हर्ज है, यह जो क्या हर्ज है यह आदमी को वहां तक पहुंचा देता है जिसमें हर्ज ही हर्ज है। एक जगह आती है कि आदमी कहता है कि क्या हर्ज है? फिर आदमी वहां पहुंचता है जहां हर्ज ही हर्ज है।

एक बुनियादी उसूल

ऊपर दी गयी हदीस में रसूलुल्लाह (स०) ने एक बुनियादी उसूल दिया है, इसी तरह एक और हदीस में है:'' अपने दिल से फतवा लो।''(तरगीब व तरहीबः २/५५७) यानि अगर तुम लोगों से फतवा पूछोगे तो वह फतवा दे देंगे, लेकिन जरा दिल से भी तो फतवा पूछो कि क्या कह रहा है, तुम्हारे दिल में कुछ खटक है या दिल साफ है, इस बात के सिलसिले में कोई अमल हो और उस अमल के सिलसिले में अगर तुम्हारा दिल साफ है तब तो वह बात ठीक है और अगर तुम्हारे दिल के अन्दर खटक है, तो समझ लो कि इसमें कुछ न कुछ गड़बड़ है।

तहम्मुल रिवायत की शर्तें है

रसूलुल्लाह (स०) ने हज़रत हसन (रजि०) के सामने यह बात फरमाई थी जो उनको याद रही, जब आप (स०) की वफ़ात हुई तब वह छोटे थे, उस वक्त उनकी उम्र ज्यादा नहीं थी, मगर ऐसी कम उम्र भी न थी कि हदीसें महफ़ूज़ न कर सकें, तहम्मुले रिवायत की मुहद्दिसीन के यहां जो शर्त है, वह ज्यादा से ज्यादा चार साल है, इस उम्र में लोगों को बातें याद रह जाती हैं, इससे कम जो उम्र होती है उसमें आम तौर से बातें याद नहीं रहती, लिहाजा इससे कम उम्र की बहुत से लोग जो अपनी बातें बतातें हैं वह ऐसे ही उड़ाते हैं, किसी ने कोई ख्वाब देख लिया और अब तो मोबाइल में लोग इतना देखते हैं कि देखते-देखते लगता है हां वाकई में देखा था, तो इसका एतबार नहीं, अलबत्ता चार साल की उम्र में बातें याद रहती है। हज़रत हसन (रजि०) ने जिस वक्त यह रिवायत सुनी थी तो खासे बड़े थे, उन्होंने रसूलुल्लाह (स०) से बहुत सी हदीसें सुनी थीं, उन्हीं में एक हदीस यह भी है जो एक उसूली बात है कि जो चीज़ तुम्हें खटक रही हो उसे छोड़ दो और जो चीज़ बेखटक हो, तुम्हारे दिल में उसके मुताल्लिक ज़रा भी गुबार न पैदा हो रहा हो, उसको अख्तियार कर लो।

गैर दीनी मिजाज

वाक्या यह है कि यह एक ऐसा उसूल है अगर आदमी इसको अख्तियार कर ले तो बहुत सी गलत बातों

से बच सकता है, वरना आदमी तावीलें करता है और अब तो हाल यह है कि आदमी अपने फायदे के लिए अगर एक दारुल इफ़्ता में मतलब का फ़तवा न मिले तो दूसरे दारुल इफ़्ता जाता है, वहां न मिले तो तीसरी जगह जाता है, गोया उसके सामने शरीअत ज्यादा नहीं है, बल्कि उसको अपने मतलब की बात चाहिए। यह गैर दीनी और गैर शरई बात है और यह दीनी मिज़ाज से बिल्कुल हटी हुई बात है। जब एक मर्तबा तुम्हें शरीअत की बात बता दी गयी तो उसको मान लो, तुम दस जगह तो उसी के लिए जाते हो ताकि तुम्हारे मतलब की बात मिले, इसमें लोग यह करते हैं कि जो इस्तिफता तैयार करते हैं उसमें हेर–फेर करते हैं, हालांकि सवाल का जवाब तो वही होगा जो तुम सवाल करोगे, अब तुम्हारा जैसा सवाल होगा वैसा ही जवाब होगा, लिहाजा उसको लेकर तुम मुतमईन हो गये तो यह जो सवाल बदल–बदल कर तुम फतवा पूछ रहे हो, यह इसीलिए है ताकि तुम्हारा जवाब बदल जाए, गोया तुम्हारे दिल में मैल है। आज हम लोगों का यह जो मिज़ाज है कि दीन को अपने ताबए बनाया जाए, अपनी ज़रूरत के ताबए बनाया जाए, यह मिजाज बहुत ही खतरनाक है, होना तो यह चाहिए कि अपने मिज़ाज को दीन के ताबए बनाया जाए, अपनी जरूरतों को दबाया जाए, अपने मफादात को पीछे किया जाए, दीन के तकाजों को आगे बढ़ाया जाए।

कल्बे सलीम की जरुरत

किसी अमल के मुताल्लिक जब दिल में खटक होती है, वह खटक तभी होती है जब आदमी उल्टे–सीधे काम करता है, जब सीधा चलता है तो खटक ही नहीं होती, लिहाज़ा दिल साफ होना चाहिए और आदमी को हर वह चीजें अख्तियार करना चाहिए जो सीधी–सीधी दीन की बातें हैं और जो उसके नजदीक मोतबर आलिम हो, जिसके साथ वह वक्त गुजार चुका हो, जिसको जानता हो कि वह सच्चा आलिम है, अमानतदार है, अगर दिल में कोई बात खटक रही है और समझ रहा है कि सही है या गलत तो उससे पूछ ले, वरना जब तक न पूछे और खटक रहे तो हरगिज न करे, इसलिए कि जब खटक होगी तो आदमी चक्कर में पड़ेगा।

सच और झूठ का फर्क

रसूलुल्लाह (स०) ने फरमायाः बिला शुब्हा सच्चाई में इत्मिनान है और झूठ में बेइत्मिनानी है। यह हकीकत है कि सच बोलने वाला हमेशा मुतमईन रहता है, इसलिए कि वह जानता है कि कहीं फसेंगे नहीं और झूठ बोलने वाला हमेशा शुब्हे में रहता है। अव्वल तो अपनी ज़ात के एतबार से शुब्हे में रहता है कि हमने यह गलत किया या सही किया, कुछ पता नहीं, दूसरे वह अन्दर के एक उधेड़बुन में रहता है कि मैंने फलां मौके पर फलां बात कह दी थी, कहीं मैं पकड़ा न जाऊं, मैंने वह बात गलत कही थी, इसलिए आदमी झूठ से हमेशा परेशानी में रहता है और जो हमेशा, हर जगह सच बोलता है वह कभी परेशानी में नहीं पड़ता, बड़े इत्मिनान में रहता है तो सच्चाई खुद इत्मिनान है और झूठ खुद तरदुद है। जाहिर है कि झूठ में जो बात कही गयी वह खिलाफे वाक्या कही गयी, इसमें खुद ब खुद तरदुद पैदा होगा कि अब कभी आइन्दा कोई बात पेश आएगी तो इसकी तहकीक होगी और मैं फंस जाऊंगा इसलिए कि जब तहकीक होगी तो बात खिलाफे वाक्या सामने आएगी, लिहाजा यह खुद एक तरदुद है। सच्ची बात यह है कि हर वह अमल जो शरीअत के ख़िलाफ़ हो, वह दिल में खटक पैदा करता ही है और झूठ तो बहुत बड़ा गुनाह है, आदमी अगर झूठ बोलेगा तो दिल के अन्दर मैल पैदा ही होगा और खटक पैदा ही होगी, इसलिए कि शरीअत पर अमल करने में इत्मिनान है और अमल न करने में तरदुद और खटक है, लिहाजा अगर किसी शख्स की जिन्दगी में परेशानी है तो आदमी अपनी पूरी ज़िन्दगी को देखे और उसका जाएजा ले।

हासिल बहस

सच्चाई दीन की एक अहम बुनियादों में से है। सच्चाई है तो दीन की पूरी इमारत सही कायम है और अगर सच्चाई नहीं है तो इन्सान कहां जाकर फंस जाए और दीन की दीन की इमारत कहां जाकर ढह जाए कुछ पता नहीं, इसलिए हमेशा इसका ख्याल रखना चाहिए, रसूलुल्लाह (स०) ने सच्चाई के बारे में फरमाया कि इससे इत्मिनान हासिल होता है और झूठ के बारे में फ़रमाया कि यह शक व शुब्हे की चीज़ है और दिल में खटक पैदा करने वाली चीज़ है।



हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से छः सौ साल पहले बनी इसराईल में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नबी पैदा हुवे थे, उनको रब्बुल आलमीन ने मोजिज़े के तौर पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तरह बगैर बाप के पैदा किया था ताकि उनकी अहमियत मअलूम हो और फिर उनको अल्लाह तआला ने नबी बनाया ताकि वह बनी इसराईल के बहुत बढ़े हुए बिगाड़ को सुधार दें लेकिन बनी इसराईल ने उनका विरोध किया और उनके काम को रोका और नाफरमानी करते रहे, उनके छः सौ साल बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी बनाए गए यह बीच का ज़माना जो नबियों से खाली गुज़रा मज़हबी व अख़लाकी लिहाज़ से बड़े बिगाड़ और खराबियों तक पहुंच गया था और बुराइयां आख़िरी हद् तक बढ़ गई और इन्सानों ने सम्य वर्गों की देख रेख में अपने परवरदिगार के हुकमों की सख्त नाफरमानी का तरीका अपना लिया था, खुद बनी इसराईल के लोगों का हाल बहुत खराबी तक पहुंच गया था हालांकि यह लोग नबियों की औलाद थे और उनके बुजुर्गों पर अल्लाह तआला के बेहद इन्आमात हो चुके थे, उन्होंने अल्लाह की उतारी हुई किताब में तहरीफ कर डाली और अपनी इच्छा अनुसार उसके आदेशों में परिवर्तन किया और अपनी खुवाहिशात का तरीका एखतियार किया।

उन्हीं के पड़ोस में दुनिया के पच्छिमी भाग में रूमी मुशरिकों का दौर दौरा था, उनमें तो और भी अख़लाकी खराबियां, नफ़्स परस्ती, बेहयाई अय्याशी , खुदगर्जी और जुल्म ज्यादती आखिरी हद तक पहुंची हुई थी, और सभ्य दुनिया का पूर्वी भाग जो ईरान और उसके पूरब के क्षेत्रों पर फैला हुआ था, वहां के लोग भी शिर्क के साथ, बादशाही जुल्म व जोर, और सख्त समाजी ज़्यादतियों और खराबियों में पूरी तरह फंसे हुए थे। इस तरह यह सदियां ख़राबी की चरम सीमा तक पहुंच गई थी और यह ज़माना इन्सानियत के नाम पर एक धब्बा बन गया था जिसकी तफ़सील यह है

यूरोप के मुल्कों का हाल

उन देशों में शुरू में शिर्क व बुत परस्ती आम थी और अखलाकी खराबियां और ज़्यादतियां बहुत थीं फिर यहां के लोगों ने ईसाइयत कबूल कर ली लेकिन यह बुराइयां बढ़ती ही गई, उनका हाल त्वइमतज ठतपीनसज लिखता है कि: ''पांचवी सदी से लेकर दसवीं सदी तक यूरोप और उत्तरी पश्चिमी ऐशिया के इलाकों में मुशरिकाना तरीके और अख़लाकी व दीनी लिहाज़ से बड़ी बुराइयां और जुल्म ज्यादतियां हर तरफ़ फैली थीं और हर दिन यह खराबियां ज़्यादा और भयानक होती जा रही थीं, उस ज़माने की वहशत, बरबरियत (अनाचार व अत्याचार) और जुल्म पुराने जमाने की वहशत और जुल्म से कई गुने ज्यादा बढ़ी हुई थीं यहां तक कि उसकी मिसाल एक बड़े कल्चर की लाश की तरह हो गई थी जो सड़ गई हो, अतः उस कल्चर के निशानात मिट रहे थे और उस पर पतन की मुहर लग चुकी थी, वह देश जहां यह कल्चर बढ़ा और फला फूला पिछले ज़माने में उन्नति की सीमा को पहुंच गया था, जैसे, इटली, फ्रांस वहां तबाही, निराज और मनमानी जिन्दगी का दौर दौरा था।''

उन देशों में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद दीनी लिहाज़ से ईसाईयत के कुबूल कर लिये जाने पर अपने शुरू ही ज़माने में इन्तिहा पसन्दों की तहरीफ जाहिलों की तावील और रूमी नसरानियों की बत परस्ती का शिकार हो गई थी। हजरत मसीह अलैहिस्सलाम की सादा व पाकीज़ः तअलीम उस तमाम मलबे के नीचे दफ़न हो गई थी, तौहीद और एखलास के साथ अल्लाह की इबादत का नूर गहरे बादलों के अन्दर छुप चुका था। चौथी सदी के आखिर में ईसाई सोसाइटी में तसलीस का अकीदः किस तरह सरायत कर गया था उसके बारे में एक ईसाई विद्वान लिखता है : ''यह अकीदह कि एक खुदा तीन सूत्रों (इकाइयों) से मिल कर बना है, ईसाई दुनिया की पूरी ज़िन्दगी में चौथी शताब्दी के अन्त ही में रच बस गया था, जिसको मसीही दुनिया सरकारी और मान्यता प्राप्त अक़ीदे की हैसियत से बहुत दिनों तक मानती रही, यहां तक कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इस अकीदे के परिवर्तन तथा इस स्वरूप तक पहुंचने का भेद खुला।''

साउथ एशिया का हाल : मजूस

ईरान में बहुत पुराने जमाने से सल्तनत कायम थी उन्होंने लगभग भू-मण्डल के एक तिहाई हिस्से पर जो उस समय आबाद था, हुकूमत की, हुकूमत से अमन, अमन से ऐश व इशरत पैदा हुआ, अय्याशी ने दिल व दिमाग को कमजोर कर दिया, और हुकूमत की बुनियादों को हिला दिया। मानी के मज़बह ने पुराने कानून को बिल्कुल ख़त्म कर दिया, औरत और मर्द की तबीअतों में आज़ादी और आवारगी पैदा कर दी, मुजदुक के धन, धरती, नारी, पर से मिल्कियत उठाने के कारण अश्लीलता, अत्याचार, और अवज्ञा का तूफ़ान उठ खड़ा हुआ, माए अपने बेटों के इश्क का शिकार बनी, ताज और तख्त की मालिक शहज़ादियां अपने फौजी अफसरों के हैवानी भावनाओं से मौत के तख्ते पर लिटाई गईं, हराम हलाल का फर्क मिट गया, फरहाद जैसे नमक हराम नौकर अपने बादशाह के दुशमन बन गए और शेरवैह जैसे नालाएक लड़के ने हैवानी जोश में बाप का पेट फाड़ कर के शीरीं पर कब्जा किया, दुष्ट सिपाही बहराम चोबी महारानी पोरान दज के इश्क की आग का इंधनबना, ईरान की सासानी हुकूमत के पूरब में भारत की सभ्यता और शासन की अपनी व्यवस्था थी, बहुत सख्त शिर्क और मानवहीनता का माहौल छाया हुआ था।

बुद्ध धर्म

हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से छः सदी पहले बुद्ध धर्म की पैदाइश हुई, बुद्ध ने पाली भाषा को अपनाया और संस्कृत के पढ़ने पढ़ाने पर रोक लगा दी थी, वेदमत की जगह बुद्धमत स्थापित हो जाने से प्राचीन धर्म की किताबें नष्ट हो गई और उनका जानने वाला भी कोई नहीं रहा। शंकराचार्य ने उन लोगों से कुछ मुनाज़रे किये और अपनी विद्या और ज्ञान का प्रदर्शन किया परन्तु वह ३३-३४ साल की आयु में मर गए, उनकी कोशिश और परिश्रम का परिणाम इतना हुआ कि संस्कृत को फिर दरबार में जगह मिल गई, लेकिन इसके साथ साथ कविता में इतनी रूचि बढ़ी कि वास्तविकता कल्पना और विचारों में छुप गई। पुरानी किताबों में से एक किताब महाभारत पाई जाती है मगर वह भी चार लोगों की कांट छांट और परिवर्तन की वजह से सुरक्षित न रही बीस हज़ार श्र्लोक इस किताब में जअली तौर पर सम्मलित कर लिये गए।

बुद्ध धर्म की उन्नति राजा अशोक के काल तक रही उसके बाद बुद्धइज़्म पतन की ओर चला गया. बद्धइज्म के सिद्धांत सभ्य दुनिया के साथ साथ नहीं चल सकते थे, भिक्षुकों की बड़ी संख्या बुद्धमत ने तय्यार करदी जिसके कारण इस धर्म का शीघ्र पतन हुआ और देश की सीमा से बाहर भी यह धर्म हो गया, इससे भी इन्कार नहीं कि पुराणमत ने भी इसको निकालने में बड़ा प्रयास किया था। बुद्धमत के बअद देश की हालत बहुत ज़ियादा खराब हो गई फिस्क व फुजूर और फवाहिश का दौर दौरा हो गया, चक्रान्त वाम मार्गी, सहन भग, दर्शनान मुक्ती, शाक्त, नन्वार आवक, राम उपास डन्डी आदि बीसियों ऐसे फ़िरके पैदा हो गए जिन्होंने अख़लाक व तहजीब को जलाकर राख कर दिया। यह फिरके तमाम हिन्दुस्तान में छाए हुए थे, उन्होंने शराब, जुवा, बदकारी को मज़हब का लिबास पहना कर पवित्र करार दिया था।हिन्दुस्तान की यही बदतरीन हालत थी जब सिन्ध और उत्तर पच्छिमी सीमा और दक्षिणी भारत से इस्लाम के मबल्लिग पहुंचे, उन्होंने देश को इस्लाम की वास्तविकता और ज्ञान से

परिचित कराया, पवित्र आत्मा वालों को एक एहसास हुआ, अधिकांश ने इस्लाम स्वीकार किया और अधिकांश ने अपना सुधार किया।

इतिहासकार लिखते हैं : बौद्ध धर्म जो हिन्दुस्तान और मध्य एशिया में फैला हुआ था वह भी एक ऐसे मूर्ति पूजा वाले धर्म में बदल चुका था कि बुत उसके साथ चलते थे जहां उसके काफिले का पड़ाव होता वहां गौतम बुद्ध की मूर्ति स्थापित की जाती और देखते–देखते एक मअबूद तय्यार हो जाता, विद्वानों को इस धर्म और इसके संस्थापक के बारे में अभी तक यह सन्देह है कि आकाश धरती और स्वयं इन्सान के बनाने वाले खुदा के अस्तित्व पर उनका अकीदा व ईमान था या नही। उनको आश्चर्य है कि ईमान व अक़ीदा के बिना यह महान धर्म कैसे कायम रह सका।

हिन्दू धर्म

जहां तक हिन्दू धर्म का सम्बन्ध है वह देवी देवताओं की कसरत में दूसरे धर्मों से बहुत आगे है, छटी शताब्दी में इस धर्म में मूर्ति पूजा अपनी चरम सीमा पर थी। मअबूदों की तअदाद उस शताब्दी में तैंतीस करोड़ तक बताई जाती है, प्रत्येक महान, हैबतनाक अथवा नफा पहुंचाने वाली वस्तु मअबूद थी, मूर्ति कला भी अपनी चरम सीमा पर थी और उसमें नई नई बातें निकाली जाती थीं।

रूमी व ईरानी इलाकों की सल्तनतें

हकीमुल इस्लाम हज़रत शाह वली उल्लाह देहलवी जो अपने इल्मी व फिक्ही काम और मकाम के लिहाज़ से अपने ज़माने के मुजददिद व इमाम करार पाए, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत के ज़माने अर्थात छटी सदी ईसवी के हालात पर नज़र डालते हुए ईरानी व रूमी हुकूमतों के बारे में जिनमें से एक हिन्दुस्तान के पश्चिमी किनारे से शुरू हो कर पश्चिम के पूर्वी भाग तक और दूसरी सीरिया के इलाके से शुरू हो कर स्पेन के मुल्क तक फैली हुई थी और उस जमाने की सबसे बड़ी ताकतें और महान सभ्यता का केन्द्र समझी जाती थीं, लिखा है कि : ''उस समय ईरान और रूम अर्थात सासानी और बाज़नतीनी की हुकूमतें जो दुनिया की महान साम्राज्यवाद के रूप में इस भूमन्डल पर छाई हुई थीं, उनको इस ज़मीन पर हुकूमत करने का अवसर कई सदियों से मिलता रहा था और वह दुनिया की लज़्ज़त में मस्त हो रहे थे और आखिरत की ज़िन्दगी सब भूल चुके थे और उन पर शैतान का असर व गलबा छा चुका था, ज़िन्दगी के लुत्फ व राहत के साधनों में बहुत गहराई तक चले गए थे और उसमें एक दूसरे पर फख़्र कर रहे थे और दुनिया के कोने कोने से विद्वान और हुनर मन्द उनके पास इकट्ठा हो गए थे और वह उनके लिये ज़िन्दगी के बारीक पहलुओं और तकाज़ों के लिये रास्ते निकाल रहे थे, जिन पर वह बराबर अमल पैरा हो रहे थे और उस पर एक दूसरे से बाज़ी ले जाना चाहते थे और एक दूसरे से मुकाबला कर रहे थे, यहां तक कि यह कहा गया कि उनके बड़े लोगों में से कोई अपनी बड़ाई के प्रदर्शन के लिये कमर में पटका, या सर पर टोपी अगर एक लाख दरहम से कम की लगाता तो उसको लोग आर दिलाते, इसी तरह अगर उसका ऊंचा महल न होता जिसमें फव्वारा लगा होता और शानदार हम्माम (स्नानगृह) और बागीचे और उसके पास सवारी के लिये शानदार जानवर न होते और खूबसूरत दिल कश खिदमतगार न होते और खाने की किस्मों में फैलाव न होता और लिबास में जमाल और वकार का अन्दाज़ न होता, इसी तरह और चीजें जिनके वर्णन से बात लंबी होगी अगर न होती तो उसको महान और महत्वपूर्ण आदमी न समझा जाता, और यह चीजें उनकी ज़िन्दगी की बुनियादों में सरायत कर गई थीं जो उनके दिलों से निकल नहीं सकती थीं सिवाए इसके कि वह दिल चीर दिये जाएं या काट डाले जाए। यह ऐसी बीमारी पैदा हो गई थी जिसका कोई इलाज नहीं था वह बुरी तरह इसमें फँस गए थे और जकड़ गए थे, उनके समाज का कोई वर्ग छोटा बड़ा, अमीर, गरीब, कोई इस बीमारी से सुरक्षित नहीं था, कामों से लोगों के दिलों में बहुत घटिया विचार पैदा हो रहे थे और अच्छे विचारों और उच्च स्तर की नैतिकता से लोग हट गए थे।'

अरबद्वीप

इधर अरबों का हाल शिर्क, कुफ्र व गुमराही में किसी से कम न था, वह अपने को हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दीन पर कहते थे लेकिन उसके खिलाफ शिर्क और सख्त बेदीनी में मुब्तला थे, जाहिल

थे और इल्म से दूर थे इसकी वजह से तमदुन से आने वाली खराबियां उनमें नहीं थीं, इस तरह वह फ़ितरी मिज़ाज रखते थे और केवल अपने अपने खानदान की परमपराओं के पाबन्द थे, अपने पूर्वजों के रीति–रिवाज को मूल आधार समझते थे, वह जिस बात को पसन्द करलें उस पर जम जाते थे, अपनी बात और सम्मान पर अड़ जाते थे, जान ले लेते और जान दे देते थे, वह मुशरिक थे बुत परस्त थे, जुल्म व हयासोज़ी के जो तरीके उनमें फैल गए थे उन पर जमे हुए थे। इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता कि बुत परस्ती उस ज़माने में पूरी दुनिया में फैली हुई थी अटलांटिक महासागर से प्रशान्त महा सागर तक दुनिया बुत परस्ती में डूबी हुई थी ईसाइयत, सामी धर्म वाले, बुद्धमत, सानो बुतों (मूर्तियों) के आदर सम्मान में एक दूसरे से आगे बढ़ जाने में प्रयत्नशील थे।

विश्वव्यापी स्तर पर इन्सानों की पस्ती (पतन) और बिगाड़

सारांश यह है कि मानव इतिहास में यह स्थान ऐसा आ गया था कि पूरी मानवता आत्म हत्या के रास्ते पर तेजी के साथ चल पड़ी थी, इन्सान अपने पैदा करने वाले मालिक को भूल चुका था और स्वयं अपने अपको और अपने भविष्य और परिणाम को भुला दिया था उसके अन्दर भलाई और बुराई गुण और अवगुणा के बीच अन्तर करने की क्षमता नहीं रह गई थी। ऐसा मअलुम होता था कि इन्सानों के दिल और दिमाग किसी चीज़े में खो चुके हैं, उनको दीन व आखिरत की ओर सर उठा कर देखने की भी फुरसत नहीं और रूह व कल्ब की गिजा, आखिरत की कामयाबी, इन्सानियत की ख़िदमत और हाल को सुधारने के लिये उनके पास एक लमहा खाली नहीं, कभी कभी पूरे देश में एक व्यक्ति भी ऐसा नज़र न आता था जिसको अपने दीन की चिन्ता हो, जो एक खुदा को पूजता हो और किसी को उसका शरीक न ठहराता हो, जिसके अन्तः करणा में मानवता के लिए दर्द हो तथा उसके अन्धकार य भविष्य के प्रति बेचैनी हो यह स्थिति अल्लाह तआला के इस इरशाद की हूबहू तस्वीर थी कि :'' जल और थल में लोगों के कर्म के कारण फसाद फैल गया है, ताकि खुदा उनको उनके कुछ एक कर्मों का मज़ा चखाए, अजब नहीं कि वह बाज़ आजाए।'' (सूरः रूम–४१)

हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत से पहले दुनिया के मज़हबी, तमदुनी और सामाजिक हालात का जाएज़ा लेने के बाद आलमी नबी की ज़रूरत पर रौशनी डालते हुए शाह वलीउल्लाह लिखते हैं : ''यह मुसीबत जब बहुत बढ़ गई और यह मर्ज सख्त होता चला गया तो अल्लाह तआला की उन पर बहुत नाराज़गी हुई और अल्लाह के मुकर्रब फरिश्ते भी उनसे नाराज़ हुए और अल्लाह तआला की मर्जी उस मर्ज़ के इलाज के सिलसिले में उस मर्ज़ की जड़ ही काट देने की हुई और इसी लिये ऐसे नबी को भेजा जिसका पालन पोषण शिक्षा के रास्ते से नहीं हुआ था और वह उम्मी (अनपढ़) था, (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और न वह ईरानी विद्वानों से मिला था और न वह रूमी विद्वानों से मिला था और न उसने उन लोगों के तौर तरीके को अपनाया था, और अल्लाह तआला ने उस नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक तराजू का अन्दाज़ अता फरमा दिया था, कि जिस से वह अच्छे तौर तरीके को जो अल्लाह को पसन्द हैं, बुरे तौर तरीके से जो अल्लाह को नापसन्द हैं, जुदा, अलग करता था और अल्लाह तआला ने उसकी ज़बान को बोलने की वह ताकत दी जिस से वह बुरे कामों और बुरी आदतों की निन्दा करता था, जैसे रेशम आदि के कपड़े पहनना, सोने चांदी के बरतन इस्तेमाल करना, घरों को तस्वीरों और फूल बूटों से सजाना, अल्लाह के अलावा दूसरों की बड़ाई खत्म करके अल्लाह की बड़ाई कायम की और यह बात तय कर दी कि अब किसरा के ख़ातिमे के बाद फिर किसरा नहीं पैदा होगा, और कैसर के खत्म होने से नया कैसर नहीं पैदा होगा।

महान नबी की जरूरत

अल्लाह तआला के इल्म में मानव संसार अब जिस मरहले में दाखिल होने जा रहा था वह मरहला दुनिया के कोने कोने के एक दूसरे से करीब आजाने और वैज्ञानिक व व्यवहारिक अनुभवों से अधिक से अधिक लाभ उठाने का मरहला था, अतः उस आखिरी नबी को उन हालात व कैफियात के साथ मबऊस फ़रमाया और उसको जो आसमानी किताब अता की वह उन पहलुओं की जामे रहनुमा बनी, और उस किताब की हिफ़ाज़त की

जिम्मेदारी खुद ली, ताकि इन्सानों के दुष्ट स्वभाव लोग उसमें कभी ज्यादती न कर सकें और नबी की नबुवत का सिलसिला जिस तरह कयामत तक हो उसी तरह उस किताब की सच्ची रहनुमाई भी कयामत तक हो उसी तरह उस किताब की सच्ची रहनुमाई भी कयामत तक हो और इन दोनों की सरपरस्ती में उम्मते मुस्लिमा के सामने राहे हिदायत बिना किसी तबदीली के चमकता रहे और जो वास्तव में हिदायत का चाहने वाला हो वह हिदायत पा सके और जो गुमराही को अपनाए वह वास्तव में गुमराह हो। अल्लाह तआला के निश्चित प्रबंध और ज्ञान में दुनिया का जो नया दौर प्रारंभ होने वाला था उसके लिये भी अल्लाह तआला का यह फैसला हुआ कि इस आख़िरी और अन्तर्राष्ट्रीय और कयामत तक रहने वाली नबूवत के हामिल नबी के ज़रिये शुरू हो और उसकी उम्मत अर्थात उसके अनुयायी उसको दुनिया में फैलाएं, अतः उस नबी को दी हुई किताब के जरिये और उस नबी की हिदायत और स्वयं उसके व्यावहारिक जीवन द्वारा दुनिया का वह रूख बना, जिसकी बिना पर दुनिया की ज़िन्दगी में इल्म का चलन हुआ और उसका निज़ाम आलमी बना यह निज़ाम आलमी वह निज़ाम नहीं जिसको दुनिया की स्वार्थी और मनमानी करने वाली ताकतों ने अपनी सत्ता को फैलाने के लिये आलमी निज़ाम का नाम दिया है, यह इस्लामी और नबवी निज़ाम था, जिसमें भलाई को फैलाना, और हर छोटे बड़े, गरीब अमीर ताकतवर, कमज़ोर, बेसहारा सबको समान सहूलत, समान अधिकार, जीवन के समान साधन प्रदान करने और सबको एक ही तरह एक अल्लाह का अज्ञाकारी बनाने का आलमी निज़ाम है जो सारे संसार के पालनहार अल्लाह की ओर से उसके समस्त बन्दों के लिये अपने अन्तिम नबी द्वारा प्रदान किया है और इस आयते कुरआनी की तफसीर है कि ''ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमने तुम को सारे जहानों के लिये रहमत बना कर भेजा और यह तुम्हारी उम्मत एक उम्मत है और मैं तुम सब का रब हूँ, लिहाज़ा मेरी ही इबादत करो।''

करिअर नामा

एयर इंडिया एयर सर्विसेज लिमिटेड ने रिक्तियों (जॉब अलर्ट) की भर्ती के लिए एक विज्ञापन जारी किया है। इस भर्ती के माध्यम से ग्राहक सेवा कार्यकारी, रैंप सेवा कार्यकारी, उपयोगिता एजेंट सह रैंप चालक, अप्रेंटिस के ४२७ रिक्त पदों को भरने जा रहे हैं। इच्छुक उम्मीदवारों का चयन साक्षात्कार के माध्यम से किया जाएगा। उम्मीदवारों को नीचे दिए गए पते पर ऑफलाइन मोड के माध्यम से आवेदन करना होगा।

website: www.aiasl.in

भारतीय सुरक्षा प्रेस, नासिक जल्द ही कुछ रिक्तियों (जॉब अलर्ट) के लिए भर्ती करेगा। इसके लिए नोटिफिकेशन जारी कर दिया गया है। यह भर्ती जूनियर तकनीशियन के पदों के लिए होने जा रही है। योग्य उम्मीदवार इसके लिए आपको दिए गए लिंक के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन करना होगा। आवेदन करने के लिए अंतिम तारीख ०८ नवंबर २०२२ है।

website: https://ibpsonline.ibps.in/ispnjtwnov20/

जिन उम्मीदवारों ने आईटीआई में अपनी शिक्षा पूरी कर ली है, उनके लिए नौकरी का एक बड़ा अवसर (ईसीआईएल भर्ती २०२२) है। इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड ने रिक्त पदों की भर्ती के लिए एक विज्ञापन जारी किया है। इस भर्ती के माध्यम से विभिन्न पदों के कुल २८४ पद भरे जाने जा रहे हैं।
इच्छुक उम्मीदवारों को ऑनलाइन आवेदन करना होगा। आवेदन करने की अंतिम तिथि १० अक्टूबर २०२२ है।

website: ecil.co.in



हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्सलाम एक बार परवदिगार के दरबार में अर्ज गुज़ार हुए । या रब्बे गफ्फार! मुझे मेरा जन्नत का साथी दिखा दे । अल्लाह तआला ने फ़रमाया : फुलां शहर में जाओ, वहां फुलां क़स्साब तुम्हारा जन्नत का साथी है। चुनान्चे सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह अलै० वहां उस क़स्साब के पास तशरीफ़ ले गए, (ना वाक़िफ़िय्यत के बावुजूद मुसाफ़िर व मेहमान होने के नाते) उस ने आप अलै० की दावत की । जब खाना खाने बैठे तो उस ने एक बड़ा सा टोकरा अपने पास रख लिया, अन्दर दो निवाले डालता और एक निवाला खुद खाता इतने में किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी, कस्साब उठ कर बाहर गया ।

सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह अलै० ने उस ज़म्बील (यानी टोकरे) में देखा तो उस के अन्दर ज़ईफुल उम्र मर्द व औरत थे। सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह अलै० पर नज़र पड़ते ही उन के होंटों पर मुस्कराहट फैल गई, उन्हों ने आप अलै० की रिसालत की शहादत (यानी गवाही) दी और उसी वक्त रिहलत (यानी इन्तिकाल) कर गए। कस्साब वापस आया तो ज़म्बील में अपने वालिदैन को फौत शुदा देख कर मुआ–मला समझ गया और आप अलै० की दस्त बोसी कर के अर्ज की : आप अल्लाह के नबी हज़रते मूसा कलीमुल्लाह अलै० मालूम होते हैं। फ़रमाया : ! तुम्हें कैसे अन्दाज़ा हुवा ? अर्ज की : मेरे मां बाप रोज़ाना गिड़गिड़ा कर दुआ किया करते थे कि या अल्लाह ! हमें हज़रते मूसा कलीमुल्लाह अलै० के जल्वों में मौत नसीब करना । इन दोनों के इस तरह अचानक इन्तिकाल फ़रमाने से मैंने अन्दाज़ा लगाया कि आप ही हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह अलै० होंगे । क़स्साब ने मजीद अर्ज की : मेरी मां जब खाना खा लेती, तो खुश हो कर मेरे लिये यूं दुआ किया करती थी : या अल्लाह ! मेरे बेटे को जन्नत में हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह अलै० का साथी बनाना । सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह अलै० ने फ़रमाया : मुबारक हो कि अल्लाह ने तुम को मेरा जन्नत का साथी बनाया है।

वालिदैन के ना फरमान की कोई इबादत मकबूल नहीं

अल्लाहु तव्वाब की जनाब! में हम तौबा करते और उस से आफ़िय्यत का सुवाल करते हैं। आह ! मां बाप की दिल आजारी किस क़दर रुस्वाई और दर्दनाक अज़ाब का बाइस है। हदीसे पाक में है :'कब्र का अजाब हक है।' कभी कभी दुन्या में भी इस का मन्ज़र दिखा दिया जाता है ताकि लोग इब्रत हासिल करें । अपने बाप के ना फ़रमान ! के मु–तअल्लिक़ किये गए एक सुवाल के जवाब में बडे फरमातें है : बाप की ना फ़रमानी अल्लाहु जब्बार व कह्हार की ना फ़रमानी है और बाप की नाराजी अल्लाहु जब्बार व कह्हार की नाराज़ी है, आदमी मां बाप को राजी करे तो वोह उस के जन्नत हैं और नाराज़ करे तो वोही उस के दोजख है। जब तक बाप को राजी न करेगा, उस का कोई फर्ज, कोई नफ्ल, कोई नेक अमल अस्लन मक़बूल नहीं, अज़ाबे आख़िरत के इलावा दुन्या में ही जीते जी सख़्त बला (यानी शदीद आफ़त) नाज़िल होगी, मरते वक़्त वक्त कलिमा नसीब न होने का ख़ौफ़ है। (फ़तावा र–ज़विय्या, जि. १२४, स. ३८४, ३८५) मां बाप मआजअल्लाह काफ़िर भी हों तब भी शरीअत के दाएरे में रहते हुए उन के साथ हुस्ने सुलूक ज़रूरी है। अगर किसी मुसल्मान का बाप या मां काफ़िर है और कहे कि तू मुझे बुतख़ाने पहुंचा दे तो न ले जाए और अगर वहां से आना चाहते हैं तो ला सकता है।

मां बाप को गालियां दिलवाने वाले

जो लोग दूसरों को मां की गाली निकालने के आदी होते हैं वोही बहुत बुरे बन्दे हैं, येह बात कबीरा गुनाहों में है कि आदमी अपने वालिदैन को गाली दे। लोगों ने अर्ज की : या रसूलल्लाह स्व० क्या कोई अपने वालिदैन को भी गाली देता है ? फ़रमाया : हां, इस की सूरत येह है कि यह दूसरे के बाप को गाली देता है, वोह इस के बाप को गाली देता है, और यह दूसरे की मां को गाली देता है, वोह इस की मां को गाली देता है। सहाबए किराम रजि० जिन्हों ने अरब का ज़मानए. जाहिलिय्यत देखा था, उन की समझ में येह नहीं आया कि अपने मां बाप! को कोई क्यूंकर गाली देगा यानी (कोई मां बाप को गाली भी दे सकता है)। यह बात उन की समझ से बाहर थी। हुजूर स्व० ने बताया कि मुराद दूसरे से गाली दिलवाना है और अब वोह जमाना आया कि बाज़ लोग खुद अपने मां बाप को गालियां देते हैं और कुछ लिहाज नहीं करते।(बहारे शरीअत):

तकनीकी (ITI and Diploma) शिक्षा निदेशालय के द्वारा दी जाने वाली स्कॉलरशिप

इस विभाग के तहत आने वाली छात्रवृति योजना और उनके लिए पात्रता/दस्तावेज निम्न प्रकार से है :–

✻ राजर्षि छत्रपति शाहू महाराज शिक्षण शुलवृष्टि योजना के लिए पात्रता

आवेदक के पास भारत की राष्ट्रीयता होनी चाहिए। छात्र महाराष्ट्र राज्य का स्थाई निवासी होना चाहिए। आवेदक संस्थान का बोनाफाइड छात्र होना चाहिए और जीआर में उल्लिखित व्यावसायिक और तकनीकी पाठ्यक्रम (डिप्लोमा / आय.टी.आय / पोस्ट ग्रेजुएशन डिग्री) के लिए भर्ती होना चाहिए। इस योजना में डीम्ड विश्वविद्यालय और निजी विश्वविद्यालय लागू नहीं है। आवेदक केंद्रीकृत प्रवेश प्रक्रिया के तहत भर्ती होना चाहिए ।अगर आवेदक छात्र किसी अन्य छात्रवृति योजना का लाभ ले रहा है तो वो इसके लिए पात्र नहीं है। परिवार के अधिकतम २ बच्चे इस योजना के लिए पात्र है। आवेदक के परिवार की वार्षिक आय ८ लाख रूपये से अधिक नहीं होनी चाहिए ।छात्र के पिछले सेमेस्टर में न्यूनतम ५०% उपस्थिति होनी जरुरी है। सामान्य श्रेणी औरSEBC श्रेणी के छात्र इस योजना के लिए पात्र है।

दस्तावेज :✻१० वीं और आगे की मार्क शीट ✻ अधिवास प्रमाण पत्र ✻आय प्रमाण पत्र ✻ कॅप से सम्बन्धित दस्तावेज ✻ बायोमेट्रिक उपस्थिति का प्रमाण देना जरुरी है।

✻ डॉ. पंजाबराव देशमुख वास्तिगृह निर्वात भत्ता योजना के लिए पात्रता

आवेदक के पास भारत राष्ट्रीयता होनी चाहिए। छात्र महाराष्ट्र राज्य का अधिवास होना चाहिए। आवेदक संस्थान का बोनाफाइड छात्र होना चाहिए और जीआर में उल्लिखित व्यावसायिक और तकनीकी पाठ्यक्रम (डिप्लोमा / आय.टी.आय / पोस्ट ग्रेजुएशन डिग्री) के लिए भर्ती होना जरुरी होगा। इस योजना के तहत डीम्ड विश्वविद्यालय और निजी विश्वविद्यालय पात्र नहीं है। सीएपी के माध्यम से आवेदक भर्ती होना चाहिए। अगर आवेदक किसी अन्य छात्रवृति योजना का लाभ ले रहा है तो वो इसके लिए पात्र नहीं है। एक परिवार के अधिकतम २ बच्चे इस योजना के लिए पात्र है। आवेदक के परिवार की वार्षिक आय ८ लाख रूपये से अधिक नहीं होनी चाहिए ।आवेदक की पिछले सेमेस्टर न्यूनतम ५०% उपस्थिति होनी चाहिए।

दस्तावेज: ✻ १० वीं और आगे की मार्क शीट ✻ अधिवास प्रमाण पत्र ✻श्रमिक प्रमाण पत्र ✻आय प्रमाण पत्र ✻ कॅप से सम्बन्धित दस्तावेज ✻हॉस्टल के दस्तावेज



केमट्रेल: एक खतरनाक हथियार

केमट्रेल एक ऐसी गैस का नाम है, जिसके द्वारा जमीन के मौसमो को बदला जा सकता है। जैसे अत्यधिक गर्मी की जा सकती है और बहुत अधिक गर्मी वाले मौसम में सर्दी की तेज़ लहरे चलाई जा सकती हैं। सूखे, बंजर और रेगिस्तानी इलाको मे जहां बारिश का नामोनिशान नही है वहां बर्फबारी भी करायी जा सकती है। तेज़ हवाए और सख्त आधियां उन दिनो में भी चलायी जा सकती है जिन दिनों में उनके बारे में सोचा भी नही जा सकता है। भौतिक विज्ञान (फिजिक्स) के विशेषज्ञों का कहना है कि केमट्रेल बनावटी बादलो का एक ऐसा संग्रह है जो कि धुआं फेकने वाले जहाज़ो के द्वारा फैलाया जाता है। इसके फैलने से वहां का तापमान अचानक (ट्रोपोस्फेअर) (फ़िज़ा की चादर का ऊपरी हिस्सा) के तापमान तक कम हो जाता है, इसका कारण ये होता है कि इस धुंए से बादलो की एक चादर सी बन जाती है जो शीशे का काम करती है, इससे सूरज की गर्म और लाभदायक किरणे और खासकर वो किरणे जो लाल होती हैं, और उन लाल किरणों के नीचे वाली किरणे जो कि हरारत और गर्मी पैदा करती है, टकराकर वापस चली जाती हैं। इसका तापमान और हवा में नमी का संतुलन ३० प्रतिशत से भी कम हो जाता है। फिर ये गैस अधिक मात्रा में इस फैली हुई हरारत को भी कम कर देती है, जो कि कई मिलियन किलोमीटर तक के क्षेत्र मे फैली हुई होती हैं। जिसके कारण तापमान नुक्ताए इनहिमाद से भी कम हो जाता है। तेज हवाए चलनी शुरू हो जाती हैं, अन्तरिक्ष में मौजूद एटम आपस में टकराते है जिससे चमक और बिजली पैदा होती है। और फिर ये हवा एक जगह से दूसरी जगह और एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र की ओर चली जाती है।

यहां तक कि पूरे आसपास के इलाके में मौसम बदलना शुरू हो जाता है और हवाए ऐसी दिशा से चलने लगती हैं जहां से आम व्यवस्था के आधार पर नही चलती हैं। फिर उन क्षेत्रों में मौसम बहुत खुश्क होने लगता है हवाओं मे नमी की बहुत कमी हो जाती हैं। ऐसे हालात मे आसमान का अपना रंग बदल जाता है। और नीला दिखने वाला आसमान मटियाला दिखने लगता है जिसमे थोड़ी सफेदी भी होती है। हवा पानी के इस बदलाव के परिणाम मे वहां रहने वाले लोग एक खुश्क किस्म की सर्दी महसूस करते हैं। और विशेष कर उन क्षेत्रों के लोग जो जरा खुश्क और सख्त हवा पानी में रहते हैं इनको सख्त किस्म की सदी का एहसास होने लगता है। इसी प्रकार जब ये धुंए दार बादल आपस में टकराते हैं तो एक चमक पैदा होती है और बनावटी बिजली की जबरदस्त चमक और जोरदार बारिश भी शुरू हो जाती है मगर उत्तरी इलाका जहां सर्दी की अधिकता ज़्यादा होती है वहां अप्रकातिक बारिश के बजाए बर्फबारी होने लगती है, जिससे वहां के लोग बहुत अधिक कठिनाइयों में लिप्त हो जाते हैं। माहिर विशेषज्ञों व निरीक्षकों का कहना है कि इस साल रूस मे बड़े पैमाने पर लगने वाली आग और मास्को के अन्दर पैदा होने वाली सख्त गर्मी जिसमे लोगो की खालें तक झुलस सी गयीं थी इस केमट्रेल गैस का ही हिस्सा लगती हैं।

क्योंकि इस पहले मास्को मे कभी ऐसी सख्त और शदीद गर्मी नही पड़ी थी और न पहले से इसकी सम्भावनाए थी। इसी प्रकार पाकिस्तान मे आया हुआ जबरदस्त सैलाब भी (जिसने पाकिस्तान की बुनियाद हिला दी थी) इसी केमट्रेल का परिणाम लगता है। केमट्रेल गैस कोई नई खोज नही है, बल्कि कई वर्षों से इस पर खोज की जा रही है। आरम्भिक तौर पर इस प्रकार की गैस का अस्तित्व बीसवी सदी के शुरू में हुआ, वजूद मे लाने वाले व्यक्ति का नाम निकोला टेसला था। सर्बिया का रहने वाला ये व्यक्ति अपनी सदी का प्राख्यात वैज्ञानिक और भौतिक (फिजिक्स) का माहिर था, इसने ये दावा किया था कि हवा को अप्राकृतिक तरीके पर रोका जा सकता है, और फिर उसको रेडियाई लहरो के साथ बाहर निकाला जा सकता है जिसकी वजह से बनावटी गरज और चमक का पैदा होना सम्भव है। टेस्ला के इस अविष्कार से एक नये विज्ञान की बुनियाद पड़ी जिसको मौसिमयाती इन्जीनियरिंग' (क्लाइमेट इंजिनिअरींग) कहा जाने लगा। टेस्ला के इस महान अविष्कार और खोज के बाद दुनिया की बड़ी ताकतों के बीच इससे फाएदा उठाने का मुकाबला शुरू हो गया, जिसमें रूस, चीन और अमरीका शामिल हैं । जो कि शीत युद्ध (कोल्ड वार) की समाप्ति तक जारी रहा। साइंस की ये किस्म टेक्नालाजी की विभिन्न किस्मो का संग्रह है, जिसमे फिजा और जमीन दोनो शामिल है। जिसे छोटे शब्दों में मौसिमयाती इन्जीनियरिंग' कहा जा सकता है और अगर इसे स्पष्ट किया जाए तो ये कहा जाएगा कि ऐसी टेक्नालाजी जिसके द्वारा मौसम मे लम्बे समय तक के लिये बदलाव पैदा की जा सकती है।

उदाहरण के लिये जैसे एक लम्बे समय तक तूफ़ानी बारिश करायी जा सकती है, मौसम के तापमान और जमने वाले दर्जे को बदला जा सकता है। और उनको सख्त आधियों में बदला जा सकता है। इसी तरह ज़मीन में भी विभिन्न बदलाव किये जा सकते हैं जैसे ज़लज़ले पैदा करना, ज़मीन की पर्तों को आपस में टकराना, समन्दर मे तूफ़ान बर्पा करना, समन्दर की लहरों का रूख मोड़ना, अन्तरिक्ष से रेडियाई लहरो और माइक्रोवेव्ज के द्वारा किसी जगह या वायुयान को निशाना बनाना और इस प्रकार के वो सारे हमले जो आसमान से लेकर समन्दर तक और जमीन पर किये जा सकते हैं शामिल है। केमट्रेल हथियारों की मांग पूरी दुनिया से छुपा कर रखी गयी थी, और

इसका ज्ञान बड़े–बड़े राजनेताओं और फ़ौज के आला अधिकारियों को ही था, मगर इसको अचानक कनाडा के एक वैज्ञानिक डीप शील्ड ने किया जो कि पैन्टागन मे कार्यरत था, उसने मानवता की हमदर्दी मे उस हथियार को इन्टरनेट के द्वारा स्वीकार किया, और लोगो को उसके खतरे से आगाह किया, और ये भी स्पष्ट किया कि अमरीका ने इस हथियार का प्रयोग खुफिया तौर पर उत्तरी कोरिया, ईराक, अफगानिस्तान और कोसोव के कई क्षेत्रों मे किया जब यूगोस्लाविया मे गृहयुद्ध जारी था। इसी प्रकार खाड़ी युद्ध में भी खाड़ी के कई क्षेत्रों मे इसका प्रयोग किया गया, जिसके बाद वहां सूखा, बहुत सी बीमारियां और मौसमी बदलाव हुए जिसके कारण लाखो लोग मौत का शिकार हुए। और एक बहुत बड़ी संख्या विभिन्न बीमारियों का शिकार होकर विकलांग हो गयी। डीप शील्ड ने ये अपील की थी कि इस हथियार पर फौरन पाबन्दी लगायी जाए लेकिन अफ़सोस की इस खबर को आम करने के बाद ये मानव मित्र वैज्ञानिक अचानक गायब कर दिया गया। और फिर तीन साल बाद इसकी लाश इसके घर के करीब एक गाड़ी में मिली, जिस पर आत्महत्या का मामला कहकर पर्दा डाल दिया गया।

आज अमरीका के पास जहा दूसरे खतरनाक हथियार हैं वहीं ये नय हथियार भी उसके भण्डार मे है। केमट्रेल हथियार की तबाही को देखते हुए कहा जा सकता है कि अमरीका के लिये ये सम्भव है कि जो मौसम वो चाहे हम पर डाल सकता है, जिस तरह वो अपनी कोशिश और मजी से हम पर ऐसे शासक मुसल्लत करता है जो उसके लाभ के लिये काम करते हैं, इसी प्रकार इस हथियार के द्वारा वो आसानी के साथ पूरी दुनिया पर मनमानी कर सकता है और दूसरे देश भी उसकी चौधराहट स्वीकार करने पर मजबूर होंगे, क्यों कि इस नये हथियार के द्वारा इसके लिये सम्भव है कि हवाओं, सैलाबो और जलज़लों को जंग जीतने के लिये प्रयोग करे, वो अपने दुश्मनो को अत्यधिक गर्मी, और अत्यधिक सर्दी से बेकार कर सकता है वो अपनी मर्जी से जहां चाहे बारिश कर सकता है ताकि वहां का क्षेत्र हरा भरा हो जाए और जहां उसकी मर्जी नही होगी वहां के लोग खुश्की मे गिरफतार हो सकते हैं। यहां ये भी ध्यान रहे कि केमट्रेल का संबंध बहुत से नये और वबाई बीमारियों से भी है, जैसे स्वाइन फ्लू, इसी प्रकार जानवरों के द्वारा फैलने वाली वो बीमारियां भी शामिल है जिनका वजूद खाड़ी युद्ध मे प्रयोग होने वाले कैमिकल बमो के बाद हुआ था।

इस हथियार के द्वारा अमरीका अपने दुश्मनों की आबादी जो भविष्य में इसके लिये खतरा बन सकती है जिस तरह इसने इससे पहले अपने ही देश मे रेड इन्डियन्स की समाप्ती के हथियार प्रयोग किये जिससे उनकी आबादी कम से कम होती गयी और सफेद चमड़ी वाले बहुसंख्यक हो गये। और फिर उन्ही कालों की ओर से किसी खतरे की सम्भावना भी बाकी न रही। इसी तरह इसने जापान के साथ किया और अन्तर्राष्ट्रीय कानून की धज्जिया उड़ाते हुए उसने दो शहरों हीरोशिमा और नागासाकी पर इन्सानियतकश ऐटम बम गिराये जिनसे तबाही व बर्बादी इस तरह हुई जिससे दुनिया बिल्कुल अन्जान थी। उस समय तक ऐटम बम एक ख्याल समझा जाता था मगर दुनिया ने देखा कि जापान आज तक उसका खमियाजा भुगत रहा है और अब ईराक और अफ्गानिस्तान केमट्रेल हथियारों की जद में है। इन्साफ का तकाजा तो ये था कि इस हथियार का प्रयोग मानवता की भलाई के लिये किया जाता, जैसा कि सन् २००५ ई० मे हुआ जब रूस दूसरा विश्र्व युद्ध खत्म होने और जर्मनी के हारने की ६०वी बर्सी मना रहा था जिसमे दुनिया के बड़े बड़े सदर के साथ अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति जार्ज बुश भी शामिल थे। समारोह से पहले आसमान बारिश के बादलो से भरा हुआ था, और बर्फ गिरने की भी सम्भावना थी, ऐसे में एक मौसमी हथियार के प्रयोग से बादलों को बरसने से रोक दिया गया था।

लेकिन इस हथियार पर अमरीका के कब्जे के बाद इस हथियार का प्रयोग हमेशा मानवता की तबाही के लिये ही हुआ है। और आगे भी वो दुनिया पर अपना राज स्थापित करने और अपनी नयी वैश्र्विक व्यवस्था को लागू करने के लिये करेगा। इन वास्तविकताओं के बाद ये समझना बिल्कुल भी मुश्किल नही कि विश्र्व शांति का ढिंढोरा पीटने वाले खुद मानवता के लिये कितना बड़ा खतरा बन चुके हैं। केमट्रेल के फाएदे और नुकसान और फिर अमरीका के उस पर कन्ट्रेल के बाद ज़हनो मे ये ख्याल ज़रूर पैदा हो सकता है कि अब दूसरे देशों को अमरीका के सामने समर्पण कर देना चाहिए और ये स्वीकार कर लेना चाहिए कि विश्र्व की व्यवस्था में अब वही चीज़ सम्भव है जो अमरीका की मंशा होगी लेकिन ये ख्याल गलत है क्योंकि अस्ल ताकत खुदा की है और जब तक उसका फैसला है ये दुनिया बाकी रहेगी और ओर उसकी मर्जी के अनुसार उसकी व्यवस्था चलती रहेगी, इसलिये ये बिल्कुल सम्भव है कि जिस हथियार को अमरीका मानवता के विरुद्ध प्रयोग करे उसका वो खुद भी शिकार हो।

और इसके उदाहरण मौजद हैं, जैसे कि कहा जाता है कि एडस की बीमारी एक प्लानिंग के द्वारा ऐशियाई देशों मे फैलाने की कोशिश की गयी मगर खद यरोप व अमरीका उसका सबसे अधिक शिकार हुए। इसी प्रकार एन्थरेक्स यूरोपियन खोज का परिणाम था जिसका सबसे अधिक निशाना खुद यूरोपीय देश बने और खुद उन्होने इसकी रोकथाम की कोशिश की इसी प्रकार ज़मीनी और आसमानी व्यवस्था पूरी तरह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के काबू में है और इन्सानियत को नुकसान पहुंचाने वालों को खुद सज़ा देने के लिये काफी है जिसकी ताज़ा मिसालें खुद अमरीका मे आये हुए विभिन्न प्रकार के तूफान थे जिसने अमरीका को दूसरे देशों के सामने मदद का हाथ फैलाने के लिए मजबूर कर दिया था। इसलिए आवश्यकता है कि खुदा की इस महान नेमत की सही कदर की जाए और उसको इन्सानियत साजी के कामों में इस्तेमाल किया जाए, वरना जिस तरह वो नेमते देना जानता है उसी तरह वो नेमते छीनना भी जानता है बल्कि नाशुक्री के बदले मे सख्त अज़ाब मे लिप्त भी कर सकता है।

पान नं ६ से

फकीर हो गए खुदा जाने कब क्या हाल पेश आ जाए, उस वक्त के आने से पहले इस मालदारी को गनीमत समझो और इसको अपनी आख़िरत संवारने के लिये इस्तेमाल कर लो। और अपनी फुर्सत को मशगूली से पहले गनीमत समझो, यानी फुर्सत के जो लम्हे अल्लाह तआला ने अता फ़रमाये हैं।यह मत समझो कि ये हमेशा बाकी रहेंगे, कभी न कभी मशगूली ज़रूर आयेगी। इसलिये इस फुर्सत को सही काम में लगा लो। और ज़िन्दगी को मौत से पहले गनीमत समझो।

इस्लाम की खुसूसी नुमायां

इस कायनात में हर जिन्दा और मुतहर्रिक शय का एक खास मिजाज कुछ नुमायां खुसूसियात और उभरे हुए खत व खाल होते हैं जिनसे उसकी शख्सियत की तस्वीर और उसका तअय्युन होता है और वह उसकी सिफ़ात मुम्ययज़ा करार पाती हैं। इसमें अफराद, जमाअतें, मिल्लतें और कौमें मजाहिब और फ़लसफ़े यकसां तौर पर शरीक हैं। वह सब अपनी कुछ इम्तियाजी खुसूसियात और नुमाया अलामात रखते हैं। इसलिए यह दरयाफ्त और तहकीक हक बजानिब है कि दीने इस्लाम की सिफाते मुमयज्ञा और उसकी शख्सियत के सही ख़त व खाल क्या हैं? दीन की तफसीलात, तालीमात, हिदायात और मुअययन कवावीन व जवाबित मे मुताले और जुस्तुजू से पहले हमें इस हकीकत से बाखबर होना चाहिए क्योंकि दीन से मुकम्मल तौर पर फायदा उठाने और उसके रंग में रंग जाने के लिए यही फ़ितरी तरीका और इसके कफ़्ल की शाहे कलीद है।

सबसे पहले हमें इस हकीकत को जहन में रख लेना चाहिए कि यह दीन हम तक हकीमों और दानिशवरों, माहिरीने कानून, उल्माए अखलाक व नफिसयात, किश्वर कुशा और कानूनसाज़ बानियाने सल्तनत ख्याली घोड़े दौड़ाने वाले फलसफी और तालेअ उजमा, सियासी रहनुमाई और ताले उजमा और कौमों के कायदीन के ज़रिये नहीं पहुंचा। यह दीन हम तक उन अम्बियाए किराम के जरिए पहुंचा है जिनके पास खुदा तआला की वही आती थी और जिनका सिलसिला खातिमुन्नबीयीन (स०अ०व०) पर ख़त्म हो चुका है। हज्ञतुल विदाअ के मौके पर अरफात के दिन यह आयत नाजिल हुई थीः''आज हमने तुम्हारे लिए दीन कामिल कर दिया और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसंद किया।'' (सूरह अलमाइदाः ०३)इस दीन का सबसे पहला इम्तियाज और नुमाया शेआर अकीदे पर जोर व इसरार और सबसे पहले इसका मसला हल कर लेने की ताकीद है।

अम्बिया के नजदीक बेहतर से बेहतर अखलाकी ज़िन्दगी और आला से आला इन्सानी किरदार का हामिल नेकी व सलामत रवी और माकूलियत का जिन्दा पैकर और मिसाली मुजस्समा ख्वाह उससे बेहतर किसी हुकूमत का पयाम, किसी सालेह मुआशरा का वजूद और किसी मुफीद इन्किलाब का कयाम व जुहूर हुआ हो। उस वक्त तक कोई क़द्र व कीमत नहीं रखता, जब तक वह इस अकीदे का मानने वाला न हो, जिसको वह लेकर आए और जिसकी दावत उनकी जिन्दगी का नस्बुल ऐन है और जब तक उसकी यह सारी कोशिशें और काविशें सिर्फ उस अकीदे की बुनियाद पर न हों। यही वह हद्दे फ़ासिल और वाजेह व रोशन खत है जो अम्बियाए किराम की दावत और कौमी रहनुमाओं, सियासी लीडरों, इन्किलाबियों और हर उस शख्स के दरमियान खींच दिया गया है जिसका सरचश्मा फिक्र व नज़र अम्बियाए किराम की तालीमात और सीरतों के बजाए कोई और हो।

दूसरी बात यह कि अम्बियाए किराम (जिनमें सरे फेहरिस्त नबी करीम स०अ०व० की ज़ाते गिरामी है) की दावत व तब्लीग और जहद व जिहाद का हकीकी मुहर्रिक और सबब महज खुदा तआला की रजा और खुशनूदी की तलब होती है। यह एक ऐसी तेज़ तलवार है जो इस मकसदे आला के अलावा हर मकसद को काटती और नेस्त व नाबूद कर देती है। फिर न मताए दुनिया की तलब रहती है और न मुल्क व दौलत और सल्तनत व रियासत की चाहत, न सरबुलन्दी व इज्ज़त की ख्वाहिश, न गल्बाए इक्तिदार की हविस, न सरबुलन्दी, माल व मनाल और ऐश व तनम की तमन्ना, न गजब व इन्तिकाम का जज़्बा, न जाहिली हमीयत का जोश, इनमें से कोई चीज़ भी उनको जद्दोजहद और जिहाद पर नहीं उभारती।

इसका मतलब यह नहीं है कि वह कूव्वत व ताकत जिसके जरिये मुसलमान एहकामे खुदावन्दी का निफाज़ कर सकता है और दावत की राह में पेश आने वाली रुकावटों को हटा सकता है और जिसके जरिये ज़मीन में

फ़साद और जुल्म और बातिल के गल्बे की आग बुझा सकता है। मिसाली इस्लामी जिन्दगी और शरीफ तमतदीन इस्लामी मुआशरे के लिए साजगार माहौल तैयार हो सकता है। वह काबिले तवज्जे और लायके फ़िक्र व एहतिमाम हरगिज नहीं। यह तसबुर गैर इस्लामी है और इस रहबानियत का परतो जिसके लिए अल्लाह तआला ने कोई दलील और सनद नाजिल नहीं फ़रमायी।

दीन की तीसरी खासियत यह है कि अम्बियाए किराम इन अकाएद व दावत व पैगाम व शरीअत के बारे में जिसको वह लेकर आते हैं बड़े गयूर और जकीउल हिस्स वाकेअ होते हैं। वह किसी हाल में भी (ख्वाह दावत की मकबूलियत और कामयाबी की मस्लहत ही का तकाजा क्यों न हो) इसके लिए तैयार नहीं होते कि अपनी दावत और शरीअत में तरमीम या तगययुर या तब्दील गवारा कर ले। उनके यहां मदाहनत और तब्दीली–ए–मौकिफ की गुंजाइश नहीं होती। अल्लाह अपने पैगम्बर (स०अ०व०) को मुखातिब करके फ़रमाता है:'' ऐ पैगम्बर! जो इरशादात तुम पर खुदा की तरफ से नाजिल हुए हैं, सब लोगों को पहुंचा दो और अगर ऐसा न किया तो तुम खुदा के पैगाम पहंचाने में कासिर हो और खुदा तुमको लोगों से बचाए रखेगा।''(सूरह माइदाः ६७)

नुबूव्वत की इम्तियाजी खासियत और अम्बिया–ए–किराम की दावत के खत व खाल में एक नुमायां पहलू यह भी है कि उनका अस्ल जोर आखिरत की ज़िन्दगी और उसकी कामयाबी और सआदतों के हुसूल पर होता है, वह इसका इस कसरत से तजकिरा करते हैं और इसका इस दर्जे इहतिमाम व फिक्र कि वह उनकी दावत का मरकज़ी नुक्ता व महवर बन जाती है, साफ ज़हन के साथ उनके वाक्यात व अकवाल का मुताला करने वाला साफ़ महसूस करता है कि आखिरत उनका नस्बुल ऐन है और उनके लिए एक मरई और बदीही हकीकत है। यह बात उनकी फितरते सानिया बन जाती है और इसका यकीन उनके एहसासात और फिक्र व दिमाग पर छाया हुआ नजर आता है। अल्लाह ने अपने मोमिन व मुतीअ बन्दों के लिए आखिरत में जो नेमतें मुकद्दर कर रखी हैं और काफिरों और नाफरमानों के लिए वहां जो अज़ाब मुकर्रर फ़रमाया है, उसका हमावक्त ख्याल ही वह हकीकी मुहरिक है जो उनको अकीदे की तस्हीह, जिन्दगी की इस्लाह और रिश्ता–ए–उबूदियत की इस्तवारी की दावत पर उभारता है। वह उनको बेचैन रखता है और उनकी रातों की नींद और दिन का इत्मिनान इस तरह उड़ा देता है कि उनको किसी पहलू करार नहीं आता। पांचवा अम्र यह है कि इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला ही हाकिम हकीकी और फरमारवा–ए–मुतलक है, लेकिन दर हकीकत ख़ालिक व मखलूक और अब्द व माबूद का ताल्लुक, हाकिम व महकूम, अम्र व मामूर और एक बादशाह और रईयत के ताल्लुक से कहीं ज्यादा वसीअ, कहीं ज़्यादा अमीक, कहीं ज्यादा लतीफ और कहीं ज्यादा नाजुक है। इस दीन की एक खासियत यह भी है कि वह अपनी अस्ल हकीकत, ज़िन्दगी और तरो ताज़गी के साथ बाकी है, उसकी किताब महफूज और हर दौर में काबिले फ़हम है, इसकी हामिल उम्मत आम गुमराही और जिहालत उस इज्तिमाई इन्हिराफ, फरेब खुर्दगी और किसी साज़िश का शिकार हो जाने से महफूज़ है जिसमें बहुत से मज़ाहिब व मिल्लतें अपनी तारीख़ के किसी दौर में और पैरवाने मसीहियत बिल्कुल इब्तिदा ही में मुन्तिला हो गए थे। कुरआन का यह ऐजाज़ और मिन जानिब अल्लाह होने की दलील है कि उसने कुरआन मजीद की सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली सूरह फ़ातिहा में ईसाईयों को वलज़्ज़ाल्लीन का लकब दिया है, इस लफ़्ज़ और वसफ के (जो यहूदियों के वस्फ ''मगजूबे अलैहिम '' से अलग है) की तख्सीस का राज़ वही समझ सकता है जो मसीहियत की तारीख और उसके नशो व इरतिका के मराहिल से बखूबी वाकिफ है। आखिरी बात यह कि इस्लाम को एक मुआविन फिजा बल्कि ज्यादा वाजेह और मोहतात अल्फ़ाज़ में एक मुनासिब मौसम तय दर्जा हरारत व बरूदत की ज़रूरत है, क्योंकि वह एक जिन्दा इन्सानी दीन है, वह कोई अक्ली या नज़रयाती फ़लसफा नहीं जो सिर्फ दिमाग के किसी खाने या कुतुब ख़ाने के किसी गोशे में मौजूद व महफूज है, वह एक साथ अक़ीदा व अमल, सीरत व अखलाक, जज्बात व एहसासात और ज़ौक़ के मजमए का नाम है।

नाम: तबस्सुम रमजान गैबान
जन्मतारीख: १६/०८/१९९६
रंग: गोरा , उंची: ५ फूट १ इंच
मॅरीटल स्टेटस: कुवाँरी
पढाई : १० वी
बाप का नाम : रमजान हसन गैबान
काम: बेकरी
माँ का नाम: शबाना रमजान गैबान
भाई: १, बहन : १
पता: कॉग्रेस कमिटी के पीछे, बावणे गल्ली, इचलकरंजी, ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापूर
मो: ७०६६९८९७३८
९३०९५०००९४
रिश्तेदार: गैबान, मुल्ला, मुजावर, शेख,सय्यद

नाम: परवेज आलमगीर मखमल्ला
जन्मतारीख: २९/०९/१९९७
पढाई: आय.टी.आय इलेक्ट्रिकल
काम: इलेक्ट्रिकल कॉन्ट्रॅक्टर
उंची: ५ फूट ९ इंच
बाप का नाम: आलमगीर मकबूल मखमल्ला
माँ का नाम: आयेशा आलमगीर मखमल्ला
भाई: नहीं , बहन: नहीं
पता: मु.पो. आलास, ता: शिरोळ, जि. कोल्हापूर
मो: ९९२२४६९२०१
७२४९२१२७९६
रिश्तेदार: फराज,फकीर,जमादार,खतीब,मकानदार, मुजावर

नाम: शगुफ्ता महमंद कलावंत
मॅरीटल स्टेटस: कुवाँरी
जन्म तारीख: १०/१२/१९९७
उंची: ५ फूट ८ इंच, रंग : गोरा
पढाई: बी.एस.सी (मायक्रो), डी.फार्मा
बाप का नाम: महमंद रहीम कलावंत
माँ का नाम: शाहीदा महमंद कलावंत
भाई: १ अमन महमंद कलावंत
पत्ता: म्हैसाळ,तलाठी ऑफिस के पीछे, ता. मिरज , जि.सांगली
मो: ९५१८७८२६२८
८६०५३२८२२५

नाम: आरीफा रफीक तांबोळी
मॅरीटल स्टेटस: कुँवारी
जन्म तारीख: ०५/०८/१९९०
उंची: ५ फूट २ इंच, रंग: गोरा
पढाई: बी.ए
बाप का नाम: रफीक अब्दुलकरीम तांबोळी
माँ का नाम: शाहीदा रफीक तांबोळी
बहन: १, शिरीन सरफराज शेख
भाई: १, राहील रफीक तांबोळी
पता: गंगावेश, कोल्हापूर
मो: ९०२८८४२२२०
९०२८०७२४२४
रिश्तेदार: शिकलगार, तांबोळी,

नाम: अफशान जावेद सनदी

मॅरीटल स्टेटस: कुँवारी

जन्म तारीख: २७ /११/१९९६

उंची: ५ फूट ४ इंच, रंग: गोरा

पढाई: बी.एस.सी. मॅथ्स, एम.बी.ए. (फायनान्स)

बाप का नाम: जावेद बादशाह सनदी (इंजि.) ऐव्हरी इंडिया चेअरमन ऑफ स्वास्तिक इंडस्ट्रिज अॅण्ड समय रिसर्च इंडस्ट्रिज

माँ का नाम: गर्व्हेमेंट सर्व्हंट प्रायमरी टिचर

भाई: १, बी.बी.ए. पी.जी.डी.एम. एम.बी.ए. पी.जी.पी.एम.

पता: ३३६६-बी.-११ गिरीश सिनेमा हॉलजवळ, कुरुंदवाड, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापूर

मो: ९६२३२००६००, ७७९८११०५७०

लडका वेल एज्युकेटेड, कम्पॅटिबल,समझदार,वेल सेटलड होना चाहिए।

नाम: हुसैन एस शेडबले

मॅरीटल स्टेटस: (बीवी का इन्तेकाल हुवा है)

जन्म तिथि:-१५/०३/१९९१

ऊंचाई :-५ फीट ३ इंच

रंग:- सांवाला

शिक्षा:-१२ उर्दू माध्यम

कार्य:-होटल

१ बहन, १ भाई-विवाहित

पता : मोमिन गली, मु.पो: कुरुंदवाड़,ता:शिरोल, जिला: कोल्हापुर

मो: ९९७०६७५४०९

नाम: आसमा अल्ताफ मुल्ला

जन्मतारीख: ०६/११/१९९०

पढाई: एम.ए, डी.एड, बी.एड, (मराठी)

उंची: ५ फूट ५ इंच , रंग: गोरा

बाप का नाम: अल्ताफ मुल्ला

माँ का नाम: मुमताज अल्ताफ मुल्ला (रिटायर्ड टीचर)

भाई: १ , असिफ मुल्ला (इंजिनिअर)

पता: मु.पो. माशाअल्लाह बंगला, हरी स्टेशनरी, अभयनर, सांगली

मो: ९८९०९६०१५१
९०११०१६००६

रिश्तेदार: मुल्ला, मुजावर, शेख, मकानदार, पठाण, जमादार

नाम: आयेशा अकबर मोमिन

मॅरीटल स्टेटस: तलाकशुदा

जन्म तारीख: २२/०४/१९९४

उंची: ४ फूट १० इंच, रंग : गोरा

पढाई: एम.ए

बाप का नाम: अकबर युसूफ मोमिन

माँ का नाम: अमीना अकबर मोमिन

भाई: १ आदिल अकबर मोमिन

पत्ता: भाळवणी , जि. सांगली

(३ साल की लडकी)

मो: ९७६७१०११९२

(तलाकशुदा)

नाम: इस्माइल अयुब नदाफ

जन्मतारीख: ०१/०७/१९८७

पढाई: १० वी पास (उर्दू)

काम: फरशी कॉन्ट्रॅक्टर

उंची: ५ फूट ८ इंच , रंग: मिडीयम

बाप का नाम: अयुब कासीम नदाफ

माँ का नाम: हुशेनमा अयुब नदाफ

बहन: आयेशा अमानुल्ला नदाफ (शादीशुदा)

पता: महावीर नगर, सांगली

मो:९९६०८०१५८६

४ महिने वक्त लगा है।

नाम: बालेचाँद दस्तगीर बागवान

मॅरीटल स्टेटस: तलाकशुदा

जन्म तारीख: ०२/०४/१९८५

उंची: ५ फूट २ इंच, रंग : गोरा

पढाई: १२ वी (फूट वेअर, अॅपे रिक्षा)

बाप का नाम: दस्तगीर बागवान

भाई: २ (शादीशुदा)

पत्ता: कुरूंदवाड,ता. शिरोळ, जि. कोल्हापूर

मो: ८६००८८७१२२

नाम: युनूस महमंद नदाफ

जन्मतारीख: १६/०१/१९९८

पढाई: बी.ए

काम: कन्स्ट्रक्शन बिझनेस

उंची: ६ फूट , रंग: सावला

बाप का नाम: महमंद नदाफ

बहन: ३ बहन,१ शादीशुदा, २ कुवाँरी

पता: गल्ली नं १, हनुमाननगर, सांगली

मो: ९९६०८०१५८६

नाम: आसिफ बशीर मुल्ला

मॅरीटल स्टेटस: कुवाँरा

जन्म तारीख: ०८/०५/१९९९

उंची: ५ फूट ५ इंच, रंग : गोरा

पढाई: १२ वी (होलसेल चिकन सेंटर)

बाप का नाम: बशीर गफूर मुल्ला

माँ का नाम: अफ्साना बशीर मुल्ला

भाई: १

पत्ता: भाळवणी , जि. सांगली

मो: ७३८५६००८८१